यूको पटना दर्पण

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना, वर्ष-11, अंक-2 अक्तूबर- मार्च -2020

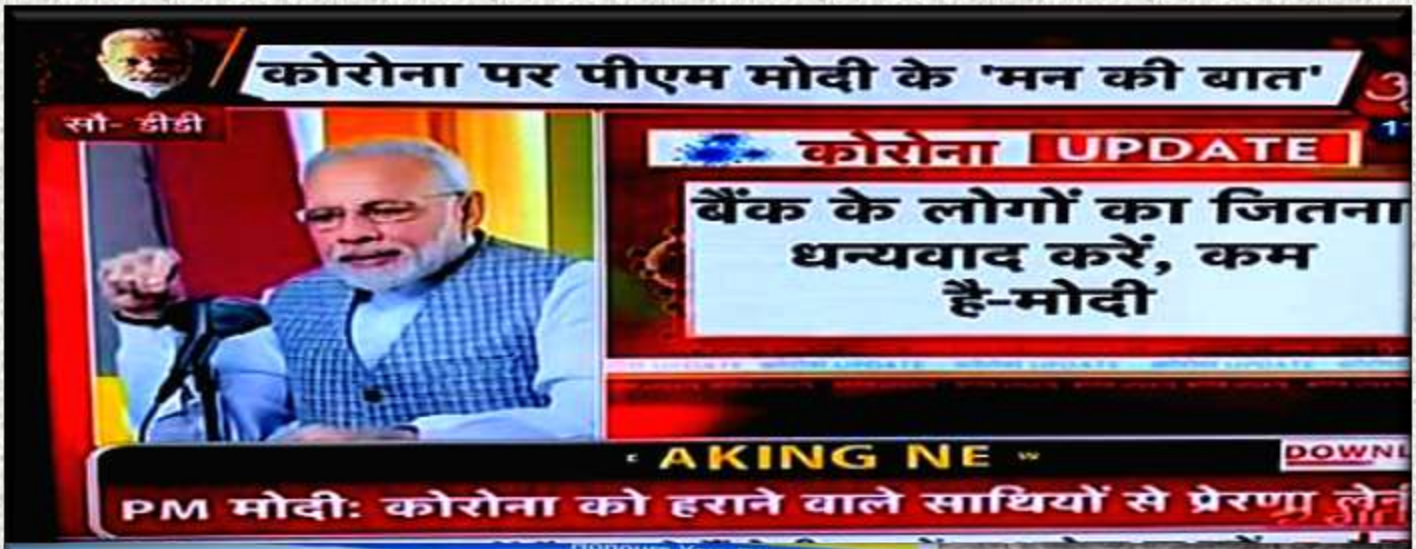

कोरोना काल में लॉकडाउन

लॉकडाउन: कृपया लक्ष्मण-रेखा का उल्लंघन न करें

कोरोना विशेषांक

यूको पटना दर्पण

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना की गृह पत्रिका

संपादक- मंडल

संरक्षक व प्रधान संपादक

दिलीप सिंह राठौड़
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

परामर्शदाता

मनोज कुमार
सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

सलाहकार समिति

एस एन श्रीवास्तव, मुख्य प्रबंधक
वीणा कुमारी, मुख्य प्रबंधक

संपादक

डॉ सुनील कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

विशेष सहयोग

स्नेहा सिन्हा, वरिष्ठ प्रबंधक
गुंजन कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक
रंजीत रंजन, वरिष्ठ प्रबंधक

विषय- सूची

विषय		पृष्ठ सं.
1.	संरक्षक व प्रधान संपादक की कलम से	01
2.	उप अंचल प्रमुख की कलम से	02
3.	संपादकीय	03
4.	बैंक के लोगों का जितना धन्यवाद करें कम है	04
5.	यूको बैंक जी ड़ी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला	05
6.	यूको बैंक, मातृभाषा सम्मान	07
7.	यूको मासिकी पटना का विमोचन	08
8.	यूको बैंक जी ड़ी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला प्रिंट मीडिया की सुर्खियों में	09
9.	कोरोना काल के दौरान और बाद की बैंकिंग	10
10.	राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से वसूली	11
11.	बैंककर्मी भी कोरोना योद्धा- इनके जज्बे को सलाम	13
12.	यूको बैंक : 77 वर्षों की सर्वोत्तम ग्राहक सेवा	14
13.	टाउन हॉल बैठक	15
14.	हिंदी को विश्व भाषा बनाने हेतु यूको बैंक कृतसंकल्प	16
15.	देश को एक सूत्र में पिरोती है हिंदी (नराकास प्रतियोगिता)	18
16.	कोरोना वायरस : खुद रहें और दूसरों को भी रखें सुरक्षित	20
17.	कोरोना वायरस की कहानी : वर्तमान और भविष्य	21
18.	कोरोना : भविष्य के लिए स्वर्णिम अवसर	24
19.	आपदा में अवसर को तलाशने की जरूरत	28
20.	प्रवासी मज़दूरों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में स्वर्णिम अवसर	30
21.	कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा और उसका भविष्य	32
22.	यूको बैंक के कोरोना कर्मवीरों को सलाम	38
23.	कोविड़-19 बैंकिंग लेनदेन में बरतें सावधानी	42
24.	लॉकडाउन के दौरान बैंकिंग सेवाएँ	43
25.	कोरोना योद्धाओं को शत-शत नमन	47

संपादकीय कार्यालय का पता

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना, ब्लॉक ए,चतुर्थ तल, मौर्या लोक कॉम्पलेक्स,न्यू डाक बंगला रोड,
पटना – 800001, फोन 0612- 2223953,2222925,6450671,फैक्स : 0612-2220489
ई-मेल / E Mail : zo.patna@ucobank.co.in

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेखों में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के हैं। संपादक मंडल तथा यूको बैंक के नहीं। इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो ही यह आवश्यक नहीं है।

संरक्षक व प्रधान संपादक की कलम से ....

दिलीप सिंह राठौड़
उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख

प्रिय मित्रो !

आप सभी को सादर नमस्कार !

वित्तीय वर्ष 2019-20 समाप्त हो चुका है और नया वित्तीय वर्ष 2020-21 का आगमन हो चुका है। हम आशान्वित है कि पिछले वित्तीय वर्ष का परिणाम हमारे बैंक के हित में होगा। हालांकि एक यह भी सच्चाई है कि मार्च 2020 का महीना कोरोना वायरस (कोविड-19) की वजह से हम सभी के लिए मुश्किलों भरा रहा है। फिर भी हमारे स्टाफ सदस्य चुनौतियों को स्वीकार करते हुए ग्राहकों को सर्वोत्तम बैंकिंग सेवा प्रदान कर रहे हैं। हम अपने स्टाफ सदस्यों की कर्तव्यनिष्ठा के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

साथियो, अपने कर्तव्य पथ पर अड़िग रहते हुए हमें अपनी सुरक्षा और स्वास्थ्य पर भी विशेष ध्यान देना है। ग्राहकों को सेवा प्रदान करने के साथ-साथ जीवन रक्षा संबंधी एहतियात भी बरतें। आज बैंकर्स भी आपातकाल में वैसे ही कार्य कर रहे हैं जैसे- सैनिक, डॉक्टर्स, नर्सेस, म्युनिसिपल स्टाफ और पुलिस कर रहे हैं। बैंकर्स आवश्यक सेवाएँ तभी प्रदान कर सकते हैं जब वे स्वस्थ हों।

आप ग्राहकों से यह निवेदन करें कि पासबुक प्रिंटिंग और बैलेंस की जानकारी के लिए शाखा में नहीं आएँ। नकदी निकासी एवं नकद जमा (कैश डिपॉजिट) के लिए एटीएम (ATM- Automated Teller Machine) का उपयोग करें। शाखा परिसर में एक समय में चार से ज्यादा ग्राहक नहीं रहें। वे मास्क (मुंह को रूमाल से ढकें) लगाए बिना शाखा परिसर में प्रवेश नहीं करें। उन्हें यह कहें कि वे लेनदेन खत्म होने के बाद शाखा परिसर को तुरंत छोड़ दें। शाखा परिसर के अंदर रखी किसी भी वस्तु को नहीं छूएँ और अपनी खुद की कलम अपने साथ लाएँ। शाखा प्रबंधक की केबिन में सिर्फ एक समय में एक ही ग्राहक हो। एटीएम बटन का उपयोग करते समय टिसू पेपर का उपयोग करें।

इस विकट परिस्थिति में हम सभी बैंकर्स अपने ग्राहकों को उत्तम सेवा प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प हैं। अभी सरकार द्वारा जारी डीबीटी के तहत सभी ग्राहकों को उचित सेवा देना है। हर पल हमें अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुए अपने कार्यों को अंजाम देना है। आज का समय बहुत ही चुनौतियों से भरा है। हमें अपने विवेक और संयम से काम लेना है। समय-समय पर सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों का अनुपालन अवश्य करें।

भारत में आज कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण को रोकने के लिए लॉकडाउन कारगर सिद्ध हो रहा है। हम सभी लॉकडाउन का बखूबी पालन करें। इस वायरस के लड़ने के लिए बैंकिंग जगत के स्टाफ सदस्यों की जितनी तारीफ की जाए कम है। मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि हमारी सभी शाखाएँ अपने कर्तव्यपथ पर अडिग रहते हुए ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवाएँ प्रदान कर रही हैं।

कर्म ही पूजा है के आधार पर आज बैंकर्स अपने कार्यों को चुनौतीपूर्ण तरीके निपटान कर रहे हैं। वे अपने परिवार की परवाह न करते हुए ग्राहक सेवा, जन-सेवा और राष्ट्रसेवा को सर्वोपरी मान रहे हैं। बैंकर्स के लिए आज पूरा राष्ट्र ही उनका परिवार है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(दिलीप सिंह राठौड़)
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रमुख की कलम से .....

मनोज कुमार
सहायक महाप्रबंधक व उप अंचल प्रमुख

प्रिय साथियो,

आप सभी को सादर नमस्कार

वित्तीय वर्ष 2019-20 समाप्त हो चुका है और नया वित्तीय वर्ष 2020-21 का आगाज हो चुका है। पिछले वित्तीय वर्ष में हमारे अंचल के स्टाफ सदस्यों ने पूरी मेहनत, लगन और कर्तव्यनिष्ठा के साथ कार्य करते हुए उम्दा प्रदर्शन किया है।

संकल्प- 2020 के साथ जो विजन लेकर हम चले थे और उस पर हमलोगों ने सालो भर बहुत ही अच्छी तरह से मेहनत किया उसका परिणाम निश्चित तौर पर हमारे बैंक के पक्ष में होगा। हमलोग निश्चय ही अपने बैंक की लाभप्रदता में वृद्धि करेंगे एवं पीसीए से बाहर आएंगे एनपीए को 20% और नेट एनपीए को 6% से नीचे रखना हमारी प्राथमिकता है।

6 जनवरी, 2020 से यूको कार्निवल रिटेल लोन, अन्य रिटेल लोन एवं एमएसएमई के लिए अभियान चल रहा था उसके भी शानदार परिणाम आएंगे, इसका भी मुझे विश्वास है। और पटना अंचल सभी मानदंडों (पारामीटर) में अग्रणी अंचल के रूप में जाना जाएगा। हमलोगों ने पूरे वित्तीय वर्ष में यह दिखाया है कि एक टीम, एक स्वप्न के साथ बेहतरीन कार्य किया है और उसकी सफलता के भी हमलोग सहभागी बनेगे।

मित्रो, जैसाकि आप सभी को मालूम है कि आज पूरा विश्व पिछले कुछ महीनों से कोरोना वायरस (कोविड -19) के संक्रमण से ग्रसित है। यह भी संभव हो सकता है कि इससे बैंकिंग व्यवसाय पर भी असर पड़ेगा। परंतु हमलोग एक टीम के रूप में इसपर विजय प्राप्त कर लेंगे।

हम अपने सभी स्टाफ सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते है कि वे इस विकट परिस्थिति में भी ग्राहकों को उत्तम बैंकिंग सेवा प्रदान कर रहे हैं। लॉक डाउन के समय सरकार द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देशों का उचित तरीके से अनुपालन करते हुए हमारी शाखाएँ सामाजिक दूरी (Social Distancing) के साथ बैंकिंग सेवाएँ प्रदान कर रही हैं।

मुख्य रूप शाखाओं में कार्य करने वाले सभी स्टाफ सदस्यों की जितनी भी तारीफ की जाए कम है क्योंकि वे ही हमारे बैंक के फ्रंट लाईनर हैं। वे ही हमारे ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवा प्रदान कर बैंकिंग व्यवसाय में वृद्धि करते हैं। उन्हीं की बदौलत हमारे ग्राहक बैंकिंग सेवा का लाभ उठा रहे हैं। हाल ही में सरकार ने डीबीटी के माध्यम से लाभार्थियों के लिए सहायता राशि भेजी है जिसे निर्धारित समयावधि में वितरित करना है।

मुझे यह जानकार काफी प्रसन्नता हुई कि हमारी बहुत सी शाखाओं ने एक दिन में 400 से ज्यादा लाभार्थियों को संबंधित राशि का भुगतान सामाजिक दूरी बनाते हुए कर रही हैं। सभी शाखाओं में ग्राहकों को आते और जाते समय उनके हाथों को सैनिटाइज़ किया जाता है। कुछ शाखाओं ने तो ग्राहकों के लिए टेंट लगाकर उनके लिए पीने का पानी, सैनिटाजर और चाय-पान की भी व्यवस्था की है ताकि ग्राहकों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। यह काबिले तारीफ है।

आज हमारे बैंकर्स अपनी और अपने परिवारवालों की परवाह नहीं करते हुए वे अपने ग्राहकों को उत्तम सेवा व सुविधा प्रदान करने के लिए अपने कर्तव्यपथ पर अडिग हैं। हम उनकी इस सच्ची कर्तव्यनिष्ठा और तत्परता के प्रति तहे दिल से साधुवाद देते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि कोरोना वायरस रूपी अंधकार पूरे विश्व से बहुत जल्द ही खत्म हो जाएगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

मनोज कुमार

(मनोज कुमार)
सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख

संपादकीय

प्रिय साथियो,

"जिंदगी जख्मों से भरी है, वक्त को मरहम बनाना सीख लो ।
हारना तो है मौत के हाथों एक दिन, फिलहाल जिंदगी से जीना सीख लो...॥"

आज पूरा विश्व "कोरोना काल" में जी रहा है। इस काल में हमें नफा-नुकसान के बारे में न सोचकर अपने अनमोल जीवन को बचाना है। जान है तो जहान है। दूसरों की सेवा करते हुए हमें अपनी जिंदगी को सुरक्षित रखना होगा तभी हम समाज और राष्ट्र के सुनहरे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। इस करोना वायरस (कोविड-19) ने पूरे विश्व में आपदा के वातावरण का निर्माण कर दिया है। अभी तक इसका न तो कोई मुख्य लक्षण का पता चला है न ही किसी कारगर दवा की खोज हुई है। इसका प्रकोप कब खत्म होगा यह भी अज्ञात है। संभवतः अब हमें "कोरोना काल" में ही जीने की आदत डालनी होगी। जीवन में सुख-दुःख आते रहेंगे, मौत के साये भी मँडराते रहेंगे, परंतु हमें जिंदगी के हर पल को उत्साह व उमंग के साथ जीने की आदत बना लेनी चाहिए।

कहा जाता है कि जब आपदा या विपत्ति आती है तो साथ-साथ स्वर्णिम अवसर भी लेकर आती है। यह जिंदगी की ऐसी पहली रेस है जिसमें रूकाने वाला ही जीतेगा। यानि घर में रहें। सुरक्षित रहें। आज पूरी दुनिया नोवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) की समस्या से जूझ रही है। कोरोना वायरस से आज पूरी दुनिया गम के सैलाब में डूबी है। आगे की जिंदगी कैसी होगी? इसके बारे में सिर्फ कल्पना ही किया जा सकता है और उसी कल्पना के आधार पर आगे की जिंदगी की मंजिल तैयार करनी होगी। जो कल था शायद वो आज अतीत हो गया और अब हमें नई दिशा, नई सोच, नए नियम, नई परिकल्पना को हकीकत में बदलकर उसके साथ जीने को बाध्य होना होगा। हमें नई जिंदगी के लिए ज्यादा से ज्यादा सावधानी भी बरतना होगा।

कोरोना काल के दौरान राजभाषा विभाग और हिंदी से जुड़ी संस्थाएं भी तकनीक के माध्यम से राजभाषा का प्रसार करना शुरू कर दिया है। आज सेमिनार और संगोष्ठी की जगह क्रमशः वेबिनार और वेबगोष्ठी ने अपना स्थान बना लिया है। अब राजभाषा भी नए तकनीक के साथ जुड़कर अपने कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए जूम क्लाउड, माइक्रोसॉफ़्ट टीम, व्हाट्सएप्प ग्रुप, यू ट्यूब,स्काइप, विडियो कॉन्फ्रेंसिंग आदि के माध्यम से कर रहा है। अब राजभाषा की अधिकांश प्रतियोगिताएँ भी गूगल की नई तकनीक के माध्यम से ऑनलाइन कराई जा रही हैं। अब बैंकों में प्रशिक्षण भी स्मार्ट क्लासरूम, ऑडियो-विडियो, डिजिटल आधारित ई-लर्निंग एप्प आदि के माध्यम से प्रदान की जाएगी।

कोविड-19 के दौरान डिजिटल बैंकिंग कारगर सिद्ध हुआ है। डिजिटल इंडिया मिशन के तहत ऑनलाइन पेमेंट, मोबाइल बैंकिंग, वेरियस ई-पोर्टल फॉर पेमेंट, भीम एप्प यूपीआई पेमेंट, ऑनलाइन शॉपिंग, ई-कॉमर्स, नेफ्ट, आरटीजीएस आदि ने अहम भूमिका निभाई है।

हमारे बैंककर्मी भी उसी प्रकार से अपने कार्यों में लगे हुए हैं जिस प्रकार चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी, सफाईकर्मी, पुलिसकर्मी आदि। बैंक के कोरोना कर्मवीरों के प्रति जितनी भी कृतज्ञता व्यक्त करें, शायद कम होगा। हमारे स्टाफ सदस्यों ने ग्राहकों को सच्ची भावना के साथ सेवा प्रदान की है और किसी की भावना का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। हमारे कोरोना कर्मवीर अभिनंदन के पात्र हैं। उनकी सेवा अतुलनीय है। उनकी लगनशीलता, कर्तव्यव्यनिष्ठा और समयनिष्ठा की बदौलत ही बैंक सुचारू तरीके से संचालित हो रहा है।

शुभकामनाएँ !

सुनील कुमार

(डॉ. सुनील कुमार)
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

बैंक के लोगों का जितना धन्यवाद करें, कम है : प्रधानमंत्री

कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण से बचने के लिए दिनांक- 29 मार्च, 2020 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने "मन की बात" कार्यक्रम के तहत बैंककर्मियों की सेवा के प्रति धन्यवाद किया। जैसा कि हम सभी को ज्ञात है कि इस विपत्ति के समय में हमारे देश के सभी बैंकर्स अपने ग्राहकों को बेहतर से बेहतर सेवा प्रदान कर रहे हैं और ग्राहकों को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हो रही है। सरकार द्वारा जारी डीबीटी के आदेश का अक्षरशः अनुपालन करते हुए बैंककर्मियों ने अपनी जिम्मेवारी को वखूबी निभाया और सरकार की योजना को भली भांति कार्यान्वित किया है।

यह बैंककर्मी ही हैं जिन्होंने अपनी कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए सरकार की विभिन्न योजनाओं को पूरी निष्ठा के साथ साकार किया है। चाहे वो जन-धन योजना हो, वित्तीय समावेशन हो, नोटबंदी हो, डीबीटी की राशि को निर्धारित समय में जनता को वितरित करना हो या अभी लॉकडाउन के समय विषम परिस्थिति में भी अपने दायित्वों का पूरी तरह से निर्वाह कर रहे हैं। आज बैंकिंग जगत का कार्य बहुत ही सराहनीय है। बैंककर्मियों ने सर्वोत्तम ग्राहक सेवा का परिचय दिया है।

वित्तीय आर्मी कहे जानेवाले बैंककर्मियों ने अपने कार्यों को गंतव्य लक्ष्य तक पहुंचाने में पूरी मेहनत की है। सही समय से बैंक की शाखा और कार्यालय को खोलना । अपनी समस्याओं और गम को भूलकर ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवा प्रदान करने के धर्म का पूर्णतः निर्वाह करना। फिर अगले दिन अपने कार्यों में निर्धारित समय पर आकर ग्राहकों की सेवा में लग जाना। वास्तव में ये बैंककर्मी ही हैं जो अपने कार्यों पर निरंतर चिंतन- मनन करते रहते हैं।

ऐसा पाया गया है कि बैंकों में ग्राहकों की लंबी लाईन लगी हुई है। फिर भी बैंककर्मी अपने कार्यों को सुचारू रूप से संचालित कर रहे हैं। बैंकों ने खुद अपनी ओर से ग्राहकों के लिए सैनिटाईजर, मास्क, साबुन, हैंडवाश आदि की व्यवस्था किया है। अधिकांश बैंकों ने ग्राहकों के लिए टेंट और कुर्सी लगाकर उनके लिए बैठने की व्यवस्था के साथ-साथ पीने का पानी, हाथ धोने के लिए साबुन और चाय-पान की व्यवस्था भी किया ताकि उनके ग्राहकों को कोई परेशानी नहीं हो। लॉक डाउन के समय बैंकिंग सेवाएँ सुचरू रूप से चल रही हैं और ग्राहकों को किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं हो रही है।

हम आज बैंककर्मियों की जितनी तारीक और उनका गुणगान करें शायद कम होगा। आज उन्हीं की बजह से हमारे देश की आर्थित व्यवस्था अभी पटरी पर चल रही है। वित्तीय आर्मी कहे जानेवाले बैंकर्स अपनी जिम्मेवारी का काफी सजगता से निर्वाह कर रहे हैं। बैंक के सभी ग्राहक बैंकिंग सेवा से संतुष्ट हैं और इस आपात स्थिति में सामान्य सेवा देकर अपने ग्राहकों के चहेते बने हुए हैं। ऐसा पाया गया है कि ससमय सेवा और सरकार के आदेशों का अनुपालन करते हुए देशहित में बेहतर कार्य किया है।

यह बिलकुल सत्य है कि लॉकडाउन के दौरान बैंककर्मियो

की भूमिका सराहनीय रही है। कोरोना कहर के दौरान बैंकों ने अपने ग्राहकों को हर संभव सेवा प्रदान किया है। भले ही आवाजाही में उन्हें परेशानी हुई हो परंतु बैंक के कर्मचारियों ने समय से शाखा खोला और जरूरमंदों की सेवा की। सिर्फ यही नहीं बैंककर्मियों ने ग्राहकों को कोरोना संक्रमण से बहने के उपाय भी बताएं और शाखा परिसर एवं बाहर में सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टेन्सिंग) का अशरक्षः अनुपालन भी किया। लॉकडाउन के दरम्यान हमारी बहुत सारी शाखाओं ने जरूरतमंदों के लिए अपने खुद के पैसों से राशन और दिनचर्या की जरूरी चीजों को भी बांटा। ऐसी सेवा से उन्होंने मानवता का उच्च स्तरीय परिचय दिया है। ससमय सेवा प्रदान करते हुए ग्राहकों को अपने परिवार की तरह शुभचिंतक बने रहना यह दर्शाता है कि वे सच्ची भावना से लबरेज हैं। बैंकिंग सेवा के साथ-साथ देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत रखने में बैंकरों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। कोरोना काल में भी बैंकों ने अपनी सेवा को अपना धर्म और परम कर्तव्य समझा। आर्थिक योद्धा के रूप में बैंककर्मियों ने देश हित को सर्वोपरी मानकर कार्य किया है। उनकी अहम भूमिका की वजह से ग्राहकों ने उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त किया है।

यूको बैंक, जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन

पटना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो (डॉ) रासबिहारी प्रसाद सिंह के उद्गार

यूको बैंक, जी. डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए माननीय कुलपति प्रो. (डॉ) रास बिहारी प्रसाद सिंह, साथ में यूको बैंक, अंचल कार्यालय,पटना के अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़, उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार, निदेशक प्रो. (डॉ) रबीन्द्र कुमार व अन्य ।

विषय चाहे कोई भी हो, बहस चाहे किसी भी मुद्दे पर हो लेकिन जब उसका माध्यम हिंदी हो तो ज्यादा से ज्यादा लोगों तक वह संदेश आसानी से पहुँच जाता है और लोग लाभान्वित होते हैं। भाषा हमेशा से ही भावों की वाहिका रही है। अपनी भाषा के माध्यम से हम अपने विचारों और भावनाओं को सही तारीक से प्रस्तुत कर सकते हैं। पर्यावरण पर राजभाषा हिंदी में व्याख्यानमाला का आयोजन सभी के लिए सुग्राही एवं उचित है। आज हमारे हुएं हैं। यह हमें बढ़ने तथा विकसित होने का बेहतर माध्यम देता है, यह हमें वह सब कुछ प्रदान करता है जो इस ग्रह पर जीवन यापन करने हेतु आवश्यक है। हमारा पर्यावरण भी हमसे कुछ मदद की अपेक्षा रखता है जिससे की हमारा लालन-पालन हो, हमारा जीवन सही बना रहे और कभी नष्ट न हो।

उक्त बातें यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने यूको बैंक द्वारा पटना विश्वविद्यालय के सेंट्रल लाइब्रेरी में माननीय कुलपति पटना विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में आयोजित जी. ड़ी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला के उद्घाटन सत्र में कहा।

पटना विश्वविद्यालय, सेंट्रल लाइब्रेरी पटना के निदेशक प्रो. (डॉ) रबीन्द्र कुमार ने कहा कि पर्यावरण का संरक्षण और उसके विकास में आज की युवापीढ़ी की महत्वपूर्ण भूमिका है। पर्यावरण को बचाने के लिए हम सभी को अपने सबसे पहले स्वयं से फिर घर से, समाज से, शहर से पहल करने की जरूरत है। अगर हमारा पर्यावरण सुरक्षित हैं तो हमारा भविष्य भी हरा-भरा होगा। पर्यावरण को संरक्षित करना हमारे लिए एक चुनौती है। इसे बचाने के लिए हम सभी को आगे आना होगा। यह सभी के लिए अनिवार्य है।

सभा को संबोधित करते हुए अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़।

इसके पहले उक्त कार्यक्रम का शुभारंभ माननीय कुलपति पटना विश्वविद्यालय, पटना के प्रो. (डॉ.) रास बिहारी प्रसाद सिंह के कर-कमलों से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। यूको बैंक, जी. ड़ी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) रास बिहारी प्रसाद सिंह ने "सतत विकास हेतु पर्यावरणीय संतुलन की अनिवार्यता" विषय पर अमूल्य विचार रखा और श्रोताओं को विशेष रूप से यह बताया कि पर्यावरण को कैसे सुरक्षित और संरक्षित रखा जा सकता है।

उन्होंने कहा कि धरती पर जीवन के लालन-पालन के लिए पर्यावरण प्रकृति का उपहार है। वह प्रत्येक तत्व जिसका उपयोग हम जीवित रहने के लिए करते हैं वे सभी पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं। जैसे- हवा, पानी, प्रकाश, भूमि, वृक्ष, जंगल और अन्य प्राकृतिक तत्व। हमारा पर्यावरण धरती पर स्वस्थ जीवन को अस्तित्व में रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फिर भी हमारा पर्यावरण दिन-प्रतिदिन मानव निर्मित तकनीक तथा आधीनीक युग के आधीनीकरण की वजह से नष्ट होता जा रहा है। हम सभी को अपनी गलती का सुधार करना होगा तथा स्वार्थपरता त्याग कर पर्यावरण को प्रदूषण से सुरक्शित तथा स्वस्थ करना होगा। हमारा छोटा सकारात्मक कदम बदलाव कर सकता है तथा पर्यावरण की गिरावट को रोक सकता है।

माननीय कुलपति प्रो (डॉ) रस बिहारी प्रसाद सिंह जी ड़ी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हुए।

प्रो.(डॉ) रासबिहारी प्र. सिंह ने कहा कि मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधा के लिए प्रकृति का दोहन किया है। अपने जीवन को आराम- तलबी बनाने के लिए मनुष्य ने विभिन्न तरीकों से पर्यावरण को असंतुलित किया है। सिर्फ अपने जीवन को संरक्षित करने के लिए उसने वृक्षों को नुकसान पहुंचाया। आज ऐसी स्थिति आ चुकी है कि इस दुनिया में सर्व सक्षम व्यक्ति ही जीवित रह सकता है। कल को ऐसा न हो कि आनेवाली पीढ़ी हरे भरे वृक्षों को देखने के लिए लालायित हो जाए। हमें अपने आनेवाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण संबंधी कुछ विशेष प्रयोजन करना होगा। अपने राष्ट्र निर्माण के लिए हमें पर्यावरण को बचाना होगा। पीपल का पेड़ हमेशा ऑक्सिजन देता है यही वजह है कि लोग कहते हैं कि आप पीपल के वृक्ष में जल डालें तो आपके कष्टों का निवारण हो जाएगा।

माननीय कुलपति ने कहा कि पर्यावरण को सिर्फ सरकार के भरोसे नहीं छोड़ना चाहिए बल्कि इसे बचाने के लिए हम सभी को आगे आना होगा। यह मानवीय गलती का ही नतीजा है कि कभी रीवा के जंगल में सफ़ेद बाघ हुआ करते थे और थाईलैंड के राजा रीवा आया करते थे। मानवीय गलती और पर्यावरण में गिरावट से आज रीवा मौजूद नहीं है। मनुष्य ने अपनी शौक के खातिर भी प्रकृति का दोहन किया है। आज बहुत सारे पशु, पक्षी, जीव-जन्तु, जानवर विलुप्तावस्था में हैं। पर्यावरण के नुकसान की वजह से आज बहुत सारे जानवरों की प्रजातियाँ नष्ट हो गईं। इसके आगे कुलपति महोदय ने कहा कि कोई अगर वृक्ष है तो वह

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा आयोजित जी. ड़ी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला में उपस्थित श्रोतागण

हमारे लिए लाखो रुपए के बराबर हो सकता है। मुसीबत के समय हमें ऑक्सिजन खरीदना पड़ता है जबकि पेड़-पौधे हमें निरंतर ऑक्सिजन देते रहते हैं। जो प्राकृतिक रूप से सही होते हैं। अगर किसी वृक्ष की आयु पचास से साठ वर्ष की होती है तो

कुलपति महोदय ने बिहार सरकार द्वारा चलाई जा रही जल-जीवन- हरियाली के बारे में विस्तृत रूप से बताते हुए कहा कि जल से ही जीवन, पर्यावरण और हरियाली है। बिहार सरकार द्वारा चलाई जा रही यह बहुत ही अनूठी पहल है। इस विषय पर हम सभी को अपने आप से शुरुआत करनी चाहिए। विषयांकित पर उन्होंने सभी श्रोताओं को विशेष ज्ञान से अवगत कराया और लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्वपूर्ण पहलूओं से रू-ब-रू कराया। उनका कहना था कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सभी वर्ग के लोगों को आगे आना चाहिए।

पटना विश्वविद्यालय के सहायक प्राचार्य डॉ अशोक कुमार झा ने कहा कि ऐसे व्याख्यानमाला का आयोजन प्रत्येक माह करना चाहिए ताकि यहाँ के विद्यार्थियों लाभान्वित हो सकें और हम सभी का ज्ञानवर्धन हो सकें। जी ड़ी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला वास्तव में हम सभी के फलदायी साबित हुआ है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विषय भी काफी तार्किक है।

अंचल कार्यालय पटना के सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि आज पर्यावरण की रक्षा करना हम सभी का परम कर्तव्य है। यह हम सभी के लिए जरूरी है। पर्यावरण है तो हम हैं। पर्यावरण हमारे स्वस्थ जीवन का परिचायक भी है। जिस स्थान का पर्यावरण अच्छा होता है वहाँ के लोग भी उस प्रकृति की सुंदरता का लाभ उठाते हैं। कुलपति महोदय और पटना विश्वविद्यालय के तमाम स्टाफ सदस्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन करते हुए श्री मनोज कुमार ने कहा कि हमें अपनी प्राकृतिक धरोहर को बचाकर रखना चाहिए ताकि हम स्वस्थ्य रह सकें।

यूको बैंक, मातृभाषा सम्मान: राज्य सिविल सेवा में उत्तीर्ण अभ्यर्थी सम्मानित

यूको बैंक द्वारा चलाए जा रहे यूको बैंक, मातृभाषा सम्मान के तहत वैसे अभ्यर्थियों को सम्मानित किया जाता है जो राज्य सिविल सेवा की परीक्षा हिंदी या क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से उत्तीर्ण होते हैं। इसके तहत यूको बैंक की ओर से सम्मानार्थ रु. 5000/- की राशि, स्मृति चिह्न और प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। दिनांक 25 फरवरी, 2020 को पटना विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय में आयोजित यूको बैंक, जी॰ ड़ी॰ बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में पटना विश्वविद्यालय, पटना के माननीय कुलपति प्रो (डॉ) रास बिहारी प्रसाद सिंह ने "सतत विकास हेतु पर्यावरणीय संतुलन की अनिवार्यता" विषय पर अपना अमूल्य व्याख्यान दिया। इसी कार्यक्रम के दौरान पिछले वर्ष बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा की परीक्षा

यूको बैंक, मातृभाषा सम्मान ग्रहण करते हुए सुश्री प्रिया कुमारी (बिहार प्रशासनिक सेवा)

में हिंदी माध्यम से उत्तीर्ण सुश्री प्रिया कुमारी (बिहार प्रशासनिक सेवा) और श्री सुबोध कुमार सिन्हा (बिहार पुलिस सेवा) को माननीय कुलपति के कर-कमलों से "यूको बैंक, मातृभाषा सम्मान" से सम्मानित किया गया। बिहार प्रशासनिक सेवा के लिए चयनित सुश्री प्रिया कुमारी ने कहा कि मनुष्य को चाहिए कि वह जिस कार्य का दायित्व ले उसे निर्धारित लक्ष्य तक पहुंचाए। असफलता से कभी भी घबराना नहीं चाहिए बल्कि उससे सीख लेते हुए आगे बढ़ना चाहिए। निरंतर परिश्रकरने से ही सफलता मिलती है। हर विषय पर हमेशा ही चिंतन-

यूको बैंक, मातृभाषा सम्मान ग्रहण करते हुए श्री सुबोध कुमार सिन्हा (बिहार पुलिस सेवा)

मनन करना चाहिए ताकि विषय आसान हो जाए। किसी भी सवाल का जवाब अपने शब्दों में लिखना चाहिए ताकि यह पता चल सके कि आपने पढ़कर अपनी भाषा में उत्तर दिया है।

बिहार पुलिस सेवा के लिए चयनित श्री सुबोध कुमार सिन्हा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि अभ्यर्थी को चाहिए कि वे अपने निर्धारित लक्ष्य से कभी भी विचलित न हों । हमेशा ही अपने आप में पूर्ण विश्वास करें। पुराने प्रश्नों को भी गंभीरता से लें। यथासंभव अपने शब्दों और भाषा में ही उत्तर दें। सिविल सेवा की परीक्षा की तैयारी के लिए टेक्स्ट जरूर से पढ़ें। कभी भी शॉर्ट कट का तरीका नहीं अपनाएं। किसी भी विषय या अध्याय को विस्तृत रूप में पढ़ें और संबंधित से विशेष जानकारी प्राप्त करें।

"यूको मासिकी पटना" का विमोचन

यूको बैंक, प्रधान कार्यालय के आदेशानुसार दिनांक 25 फरवरी, 2020 को यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा "यूको मासिकी पटना" मासिक ई-पत्रिका के प्रवेशांक का विमोचन पटना विश्वविद्यालय, पटना के माननीय कुलपति प्रो. (डॉ) रास बिहारी प्रसाद सिंह के कर-कमलों से सॉफ्टकॉपी द्वारा किया गया।

अपने संबोधन में माननीय कुलपति ने कहा कि प्रतिमाह पत्रिका का प्रकाशन किए जाने से लोगों में पढ़ने और लिखने की रूचि पैदा होगी। यह बहुत ही सराहनीय पहल है। इसके माध्यम से राजभाषा के कार्यान्वयन में गति

अंचल कार्यालय, पटना की "यूको मासिकी पटना" की ई-पत्रिका का विमोचन करते हुए पटना विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो (डॉ) रास बिहारी प्रसाद सिंह साथ में यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के अंचल प्रबंधक श्री दिलीप सिंह राठौड़, केंद्रीय पुस्तकालय के निदेशक प्रो (डॉ) रवीन्द्र कुमार और अंचल कार्यालय, पटना के सहायक महाप्रबंधक श्री मनोज कुमार

आएगी और अधिकांश लोग संवाद भी स्थापित कर सकते हैं। किसी भी पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में विशेष महत्व रखता है। इस माध्यम से अपनी संस्था की गतिविधियों के बारे में सभी लोग अवगत होते रहेंगे।

कुलपति महोदय ने पत्रिका के सभी पृष्ठों का गहनता से देखा और अग्रिम अंक के समयबद्ध तरीके से प्रकाशित होने के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ भी दी।

यूको बैंक, जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमला एवं यूको बैंक मातृभाषा सम्मान

प्रिंट मीडिया की सुर्खियों में

दैनिक जागरण

पर्यावरण को सरकार के भरोसे छोड़ना गलती

हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान 08

पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा : वीसी

दैनिक भास्कर

बिज़नेस प्लस

यूको बैंक की जीडी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला

राष्ट्रीय सहारा

यूको बैंक जीडी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला आयोजित

प्रभात खबर

हम सभी अपने स्तर से पर्यावरण के लिए करें काम : प्रो रासबिहारी सिंह

कोरोना काल के दौरान और कोरोना के बाद की बैंकिंग सेवाएँ

मनोज कुमार
सहायक महाप्रबंधक व उप अंचल प्रमुख

कोरोना जैसी वैश्विक बीमारी ने जीने के ढंग को बदलकर रख दिया है। लोगों के कार्य करने के तरीके को सामाजिक दूरी बताते हुए बादल दिया है। इससे बैंकिंग व्यवस्था भी अछूत नहीं रह पायी है।

इस बीमारी ने निपटने के लिए सभी देशों ने लॉकडाउन का पालन किया परंतु लॉकडाउन से सबने समझ लिया है कि जब तक कोरोना बीमारी की दवाई की खोज नहीँ कर ली जाती है तब तक लोगों को इसके साथ ही जीना होगा। भारत में लॉकडाउन की शुरुआत दिनांक 24 मार्च,2020 को की थी जो विभिन्न चरणों से होते हुए दिनांक- 31 मई, 2020 तक चला। तदुपरान्त अनलॉक-1 शुरू हुआ, जिसमें सभी कार्यों को धीरे-धीरे खोला जा रहा है। बैंकों ने भी लॉकडाउन के समय अपने आप को कोरोना योद्धा के रूप में परिभाषित किया है। परंतु अब बैंकिंग व्यवस्था में भी कोरोना से बचाव के साथ-साथ बैंकिंग संबंधी सेवाएँ उपलब्ध करना भी एक चुनौती है।

अतः अब आने वाले दिनों में निम्नलिखित बदलाव के साथ बैंकिंग व्यवस्था चालू रहेगा:-

1. <u>डिजिटल बैंकिंग का अत्यधिक प्रयोग</u>:- इसमें कोई संदेह नहीँ कि जब पूरे देश में लॉकडाउन था तो उस समय सिर्फ डिजिटल ही सहारा था। आज लोगों को यह भी समझ में आ गया कि कोरोना काल में ज्यादा से ज्यादा डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से ही लेनदेन किया जाए। सभी बैंकों ने डिजिटली लेनदेन के लिए विभिन्न प्लेटफॉर्म दिया है। जैसे- मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, भीम यूपीआई, वालेट पेमेंट, एनईएफ़टी, आरटीजीएस, पे-टीएम, ऑनलाइन बैंकिंग, एटीएम आदि। नकद लेनदेन से कोरोना वायरस फैलाने की संभावना बढ़ती है। अतः डिजिटल लेनदेन बचाव का रा स्ता है।

2. <u>समाज में फंड उपलब्ध कराना</u>: - देश की अर्थव्यवस्था को कोरोना ने तोड़ कर रख दी है। इसे फिर से बहाल करने में बैंकों को बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होगी। साथ ही साथ आरबीआई और भारत सरकार ने जीतने भी पैकेज की घोषणा की है उसका भी अधिकांश कार्यान्वयन बैंकों के माध्यम से ही किया जाएगा। इस क्रम में बैंकों द्वारा बड़े उद्योगों के साथ-साथ छोटे व मझोले उद्योगों , कुटीर उद्योगों, किसानों, व्यापारियों आदि को विशेष ऋण कम ब्याज दर पर उपलब्ध कराना बैंकों की प्राथमिकता होगी। बैंक अपने सामाजिक दायित्व को समझते हुए अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अग्रणी रहेगा।

3. <u>सामाजिक दूरी के साथ बैंकिंग: -</u> कोरोना वायरस बीमारी की वजह से आने वाले दिनों में ग्राहक बैंक की शाखाओं में जाने से बचना चाहेंगे और वे तभी आएंगे जब बहुत ज्यादा जरूरी समझेंगे। अब बैंकों और ग्राहकों के बीच के संबंध एलेक्ट्रोनिक मोड में चले जाएंगे। बैंक भी अपने ग्राहकों को नित-नए एलेक्ट्रोनिक देनदेन की सुविधा का प्रसार करेंगे। यदि ग्राहक बैंक आते हैं तो उन्हें थर्मल स्कैनर से गुजरना होगा यह भी संभव है कि शाखा के द्वारा पर " सेनीटाईजर टनेल" लागया जाए ताकि ग्राहक सैनीटाईज़ होकर शाखा परिसर में जाएँ ताकि सुरक्षित होकर अपना लेनदेन कर सकें। भविष्य में, बैंक वह सभी सावधानियाँ बरतेगा ताकि कोरोना वायरस का संक्रमण न फैले।

4. <u>सूचना व संदेशों का प्रबंधन : -</u> अब बैंकिंग व्यवस्था में कोई भी मीटिंग शारीरिक दूरी को ध्यान में रखकर किया जाएगा। अब सभी बैठकें एलेक्ट्रोनिक मोड से किया जाएगा। चाहे वह आरबीआई या एसएलबीसी, एलडीएम या शाखा प्रबंधकों की बैठक हो। अब ये सारी बैठकें

विडियो कॉन्फ्रेंसिंग, बेबिनार, बेब गोष्ठी, ज़ूम क्लाउड मीट एप्प, माइक्रोसॉफ़्ट मीटिंग एप्प, मिलन एप्प आदि के माध्यम से किया जाएगा। सभी पत्राचार एलेक्ट्रोनिक मोड़ में होंगे। बैंक अपने ग्राहकों को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से गाइड करेंगे।

5. रोजगार सृजन में योगदान: वैश्विक मंदी के आसार के बीच उपभोक्ता काफी समय तक सतर्कता बरतेंगे। आय एवं रोजगार में कमी आएगी। उपभोक्ता माँग में कमी आएगी। इसलिए मांगों को बढ़ाने के लिए बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। लॉकडाउन के कारण अधिकांश लोगों के रोजगार चले गए हैं। साथ ही साथ कई राज्यों में प्रवासियों की संख्या भी बढ़ गई है। बैंक द्वारा इनलोगों को लक्षित कर रोजगार का सृजन करना होगा। इसके अतिरिक्त, "आत्मनिर्भर भारत" के तहत लोंगो को आत्मनिर्भर बनाने के लिए बैंकों द्वारा काफी सरल ऋण मुहैया कराया जाएगा ताकि वे अपने व्यवसाय को काफी आसानी से संचालित कर सकें।

6. सरकार की विभिन्न योजनाओं में बैंकों की भूमिका: - अधिकांश प्रवासियों को अपने गाँव लौटने से सुकून जरूर मिला है परंतु पैसे के बगैर जीवन-यापन व भरण-पोषण करना बहुत कठिन है। ऐसे में विभिन्न राज्यों की सरकारें प्रवासियों के लिए विभिन्न योजनाएँ लाने वाली हैं। जिसमें विशेष रूप से कुटीर, मध्यम व लघु उद्योग शामिल होंगे। जिसके तहत ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा और वे अपने गाँव या शहर में ही संबंधित उद्योग संचालित कर अपना जीवन-यापन कर सकते हैं। सरकार की सभी योजनाओं के लिए सरकारी बैंकों के माध्यम से ही ऋण की सुविधा प्रदान की जाएगी। यह भी संभव हो सकता है कि बैंक द्वारा ही संबंधित व्यवसाय का निरीक्षण और देखरेख की जाए ताकि ऋण राशि का उचित उपयोग हो रहा है या नहीं।

बैंकर्स वास्तव में, आर्थिक व वित्तीय सेना हैं जो सरकारी की अधिंकांश योजनाओं को सफल बनाने में मददगार होते हैं। बैंकर्स आम जनता के काफी करीब होते हैं वे उनके आर्थिक सलाहकार होने के साथ-साथ उनके भविष्य उत्थान के लिए भी शुभचिंतक होते हैं। कोरोना काल के दौरान बैंकर्स ने अपने ग्राहकों को निर्बाध रूप से बैंकिंग सेवाएँ प्रदान किया है और कोरोना काल के बाद भी बेहतरीन सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं।

राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से ऋण वसूली

सफलता का आनंद उठाने के लिए यह जरूरी है कि हम कठिनाईयों से गुजरकर अपनी मंजिल तक पहुंचे। जब लक्ष्यों को पाना मुश्किल हो तो लक्ष्यों को बदलने की जरूरत नहीं होती है बल्कि अपने प्रयासों में बदलाव करने की आवश्यकता होती है। बस जरूरी पलों में हमें अपने कार्यों को मंजिल तक पहुँचाने में लग जाना चाहिए और अंततः हमें सफलता प्राप्त हो जाती है।

कहा जाता है कि लोक अदालत द्वारा ऋण मुकदमों के निपटान में वकील पर खर्च नहीं होता है। कोर्ट-फीस नहीं लगती है। पुराने मुकदमे की कोर्ट-फीस वापस हो जाती है। इसमें किसी पक्ष को सजा नहीं मिलती है और मामलें को बातचीत द्वारा सफाई से हल कर लिया जाता है। इसके तहत मुआवजा, न्याय और हर्जाना तुरंत मिल जाता है। इसके अधीन दोनों पक्षों की सही तरीके से सुनवाई होती है। लोक अदालत बैंकों के डूबे हुए ऋणों की वसूली के लिए मददगार साबित हुआ है।

लोक अदालत एक ऐसा मंच है जहां पर न्यायालयों में विवादों/ लंबित मामलों या मुकदमेंबाजी से पहले की स्थिति से जुड़े मामलों का समाधान समझौते से और सौहार्दपूर्ण तरीके से किया जाता है। इसमें विवादों के दोनों पक्षों के मध्य उत्पन्न हुए विवाद को बातचीत या मध्यस्तता

के माध्यम से उनके आपसी संवाद/समझौते के आधार पर निपटाया जाता है। इसी को ध्यान में रखकर समय-समय पर बैंकों के फंसे ऋणों की वसूली को ध्यान में रखते हुए लोक अदालत लगाया जाता है।

इस वर्ष दिनांक- 8 फरवरी, 2020 को लोक अदालत लगाया गया। इसके अंतर्गत पटना अंचलाधीन संबंधित शाखाओं की भागीदारी सुनिश्चित की गई। इसके तहत अधिकांश ग्राहकों से ऋण वसूली में विशेष मदद मिली। नकद वसूली के साथ-साथ समझौते के तहत भी ऋण वसूली के लिए प्रस्ताव आएँ। पटना अंचल की अधिकांश शाखाओं ने लोक अदालत के तहत अच्छी ऋण वसूली की है। इस बार भी हमारे अंचल की वसूली टीम ने कड़ी मेहनत के साथ उम्दा प्रदर्शन किया है।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी शाखाओं ने लोक अदालत के पत्रों को ऋणधारकों तक पहुंचाया। लिफलेट बटवाएँ। माईकिंग कारवाई। बी सी और वसूली एजेन्टों के माध्यम से लोक अदालत में निर्धारित तारीक को उपस्थित रहने की सूचना प्रदान कारवाई। दिनांक 8 फरवरी, 2020 को आयोजित किए गए राष्ट्रीय लोक अदालत के तहत हमारा उद्देश्य यह था कि उक्त लोक अदालत की तारीख से पहले अधिक से अधिक एकमुश्त निपटान/समझौता के तहत अधिक से अधिक अनर्जक खाताधारकों से राशि वसूल की जाए।

राष्ट्रीय लोक अदालत (वसूली) के कार्य में तीव्र गति लाने एवं उसे सफल बनाने के लिए हमने निम्नलिखित कार्य-योजना अपनायी:-

1) ज्यादा से ज्यादा अनर्जक खाताधारकों (NPA) को नोटिस प्रस्तुत किया एवं बातचीत के माध्यम से लोक अदालत के लाभ के बारे में बताया एवं इसमें दी जानेवाली छूट से उन्हें अवगत कराया गया।

2) प्रवर्तन एजेंट/वसूली एजेंट को बुलवाया एवं लोक अदालत में निपटान हेतु उधारकर्ताओं को लाने के लिए इसकी सूची उन्हें उपलब्ध कराई।

इसके विस्तृत प्रचार-प्रसार हेतु माईकिंग के माध्यम से जागरूकता अभियान के तहत अवगत कराया एवं इसकी तस्वीर को हमने व्हाट्सएप्प समूह पर भी मंगवाया।

3) राष्ट्रीय लोक अदालत की योजना की विशेषताओं से युक्त बैनर को प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित करवाया।

4) अंचल कार्यालय के कार्यपालकगण / नोडल अधिकारीगण, शाखा प्रमुखों के साथ निरंतर संपर्क में रहने एवं ऋण वसूली की स्थिति की समीक्षा करने हेतु एक सशक्त टीम का गठन किया। अंचल कार्यालय के कार्यपालकों तथा अधिकारियों ने आवश्यकतानुसार शाखाओं का दौरा भी किया।

हमें अपने पटना अंचल पर पूरा गर्व है कि हमने अपनी संस्था के उत्थान और व्यवसाय वृद्धि के लिए बेहतरीन कार्य किया। हमारी टीम ने एकजुट होकर प्रबल टीम भावना के साथ अपने कार्यों को अंजाम देते हुए वसूली के कार्य को बहुत आसान कर दिया।
हमारे पटना अंचल ने राष्ट्रीय लोक अदालत में ऋण वसूली योजना के तहत पूरे भारत में उत्कृष्ठ प्रदर्शन किया है। हमारे स्टाफ सदस्यों ने अपनी पूरी क्षमता के साथ कुछ विशेष कार्य किया है। एक सच्चे संकल्प के साथ पटना अंचल ने बहुत ही अच्छी ऋण वसूली की है।

उम्मीद करते हैं कि वर्ष 2020 के दौरान हमारे अंचल द्वारा वसूली के क्षेत्र में अच्छा कार्यनिष्पादन होगा। इसके लिए सभी स्टाफ सदस्यों को एक साथ मिलजुल कर कार्य करना होगा। वसूली के लिए ऋण धारकों को बार-बार स्मरण करना होगा कि वे यथाशीघ्र ऋण का भुगतान करें साथ ही साथ वहाँ की स्थानीय लोगों की मदद से भी ऋण की वसूली की जा सकती है।

लोक अदालत के माध्यम से ऋण वसूली की महता के बारे में ऋण धारकों को यह भी समझाना होगा कि इसके तहत उन्हें ज्यादा से ज्यादा छूट मिल सकती है। इसमें अदालत के समक्ष दोनों पक्षों के बीच सौहार्दमय वातावरण में बातचीत के साथ ऋण वसूली का रास्ता निकाला जा सकता है।

बैंककर्मी भी कोरोना योद्धा - इनके जज्बे को सलाम !

एस.एन. श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक

लो छिड़ गया है युद्ध-ए- कोरोना, जो कहता है हमसे डरो ना ।
हर जगह इसने मचाया है ऐसा घमासान ॥
होटल, विद्यालय, कार्यालय हो रहा है सब बंद ।
फिर भी हम बैंक कर्मचारी नहीं हुए हैं घर में बंद ॥

जी हाँ ! बैंकर्स वो योद्धा हैं जो कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ते हैं। जिनकी बदौलत हमारे देश का आर्थिक पहिया बिना निरंतर चलते रहता है। हम बात कर रहे हैं देश की आर्थिक स्थिति की। कोरोना काल में अधिकांश संस्थाएं बंद रहीं । सिर्फ बैंककर्मी, स्वास्थ्यकर्मी, सफाईकर्मी, प्रशासन के लोग और जरूरी सेवाएँ वाली संस्थाएं ही सेवारत व कार्यरत रहें। बैंककर्मियों ने अपने कार्यों को सही दिशा में अंजाम देते हुए देश की आर्थिक स्थिति को बिगड़ने नहीं दिया। आर्थिक सेना के रूप में बैंककर्मियों ने देश की वित्तीय व्यवस्था को बरकरार रखा। आम जनता को नियमित रूप से बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करते हुए बैंक ने जरूरतमंदों को बैंकिंग सेवा की कमी नहीं खलने दी। माना कि वित्तीय सेनाओं (बैंककर्मियों) को यातायात में, घर से कार्यालय और कार्यालय से घर जाने में मुश्किलों व कठिनाईयों का सामना करना पड़ा परंतु उन्होंने अपने ग्राहकों की सेवा में कोई कमी नहीं होने दी। ग्राहकों को मूलभूत और उचित सेवाएँ मिलती रहीं।

बैंककर्मियों ने कोरोना काल में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएँ दीं। उन्होंने "कर्म ही पूजा है" को अपना धर्म मानते हुए बेझिझक ग्राहकों की सेवा की। कहा जाता है कि ग्राहक ही किसी भी व्यवसाय का देवता होता है, उसके आने से और हमारी सेवा से (ग्राहक के) प्रसन्न होने पर ही हमारे व्यवसाय में वृद्धि होती है। कोरोना कहर के दौरान भी बैंककर्मियों ने अपनी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी। कोविड-19 संक्रमण के दौरान ही सरकार ने गरीबों के लिए विभिन्न योजनाओं की घोषणा की। डीबीटी (डाइरेक्ट बेनिफ़िट फंड) के माध्यम से करोड़ों जनता के खाते में सहायता राशि अंतरित की गई जिसका भुगतान भी निर्धारित तारीख के अंदर करना था। बैंकरों ने अपने कुशल कार्य कौशल से इस कार्य को निर्धारित अवधि में कार्यान्वित किया। किसी शाखा ने तो प्रतिदिन 300 से 400 लोगों को निर्धारित राशि प्रदान की। इसके बाद कोविड-19 ऋण सेवा योजना आई इसे भी बैंकर्स पूरी तल्लीनता के साथ निःसंकोच कार्यान्वित कर रहे हैं। बैंक ने जरूरतमंदों को नियमित रूप से संतोषजनक सेवाएँ प्रदान की और राशि के लेनदेन में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं आने दी।

शहरों में लॉकडाउन होने के बाद भी बैंकर्स बैंक जाते रहें। जब वे जानते थे कि उनको संक्रमित होने का बहुत ज्यादा खतरा है। अमूमन कैशियर और सिंगल विंडो ऑपरेटर राशि का लेनदेन करते रहें। ग्राहक मुख्य तौर पर नकदी जमा करने और राशि निकासी की सेवा ले रहे थे। इन कार्यों में संक्रमण का डर बना रहता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बैंकर्स डॉक्टर नहीं हैं। उन्हें कोरोना से बचाकर रहने का ज्यादा तरीका भी मालूम नहीं है, उनको ज्यादा जोखिम है, फिर भी वे बिना किसी हिचक के अपने कर्तव्यपथ पर डटे हुए हैं ताकि आम आदमी की वित्तीय जरूरतों को पूरा किया जा सके। बैंककर्मियों की कर्तव्यपरायणता, समयनिष्ठा, सेवाधर्म को सच्ची भावना के साथ नमन करना चाहिए क्योंकि बैंकर्स भी कोरोना के कर्मवीर हैं।

यूको बैंक: 77 वर्षों की सर्वोत्तम ग्राहक सेवा के साथ तत्पर

यूको बैंक के 77वें स्थापना दिवस के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए उप महाप्रबंधक श्री दिलीप सिंह राठौड़

ग्राहकों को 77वर्षों तक संतोषजनक बैंकिंग सेवा प्रदान करते हुए उनके बीच बैंकिंग शिक्षा, उसके उत्पादों, बैंक की प्रतिबद्धता, सेवाओं और ग्राहकों को दी जानेवाली सुविधाओं के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से भारत सरकार के अग्रणी बैंकों में एक यूको बैंक ने दिनांक 6 जनवरी 2020 को अपनी संस्था का 77वां स्थापना दिवस हर्षोल्लास से मनाया।

इस शुभ अवसर पर यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा दिनांक 06 जनवरी 2020 को बिहार राज्य की राजधानी पटना स्थित होटल यो चाइना में पटना शहर की शाखाओं के बहुमूल्य ग्राहकों के लिए टाउन हॉल बैठक का आयोजन उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

सभा को संबोधित करते हुए अंचल प्रमुख श्री राठौड़ ने कहा कि आज की बैंकिंग पूर्ण रूप से तकनीक (टेक्नॉलॉजी) पर आधारित है। इसी उद्देश्य के माध्यम से यूको बैंक भारत को डिजिटली सशक्त बना रहा है। आज की तारीख में पटना अंचल के अधीन सभी शाखाओं के ज़्यादातर ग्राहक यूको बैंक के ई-प्रोडक्टस का आसानी से उपयोग कर रहे हैं। वहाँ उपस्थित ग्राहकों को बैंक के विभिन्न योजनाओं और सेवाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। ई-उत्पादों के साथ-साथ उन्होंने कहा कि यूको बैंक अपने ग्राहकों को नई तकनीक से जोड़ने के लिए अपनी प्रतिबद्ध है।

टाउन हॉल बैठक की सभा को संबोधित करते हुए अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ साथ में श्री मनोज कुमार व एसएन श्रीवास्तव

इसके आगे उन्होंने कहा कि किसी भी संस्था को ज्यादा दिनों तक संचालित करने में मुख्य रूप से ग्राहकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह ग्राहक ही होता है जो समय-समय पर अपनी नई जरूरतों से हमें अवगत कराता

यूको बैंक की 77वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर टाउन हॉल बैठक में उपस्थित बहुमूल्य ग्राहक व स्टाफ

टाउन हॉल बैठक

दिनांक – 06.01.2020

है। आज की तारीख में ग्राहकोन्मुख सेवा से ही कोई भी संस्था अपना अस्तित्व व मौजूदगी कायम रख सकती है। ग्राहकों की सेवा को नजरअंदाज करना बैंक की व्यवसाय वृद्धि के लिए उचित नहीं हो सकता है। समय के साथ-साथ नित-नए बदलाव की भी नितांत आवश्यकता होती है। ग्राहकों के हितों को सर्वोपरी रखा जाना ही सच्ची ग्राहक सेवा हो सकती है।

सभा को संबोधित करते हुए अंचल कार्यालय, पटना के सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने कहा कि ग्राहक ही किसी भी व्यवसाय को आगे बढ़ाने में अपनी अहम भूमिका निभाता है। आज बैंक की इस लंबी यात्रा में ग्राहकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारी संस्था ने अपने ग्राहकों को उत्तम सेवा प्रदान करते हुए अपनी कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है। ऐसा कहा जाता है कि क्रेता और बिक्रेता अर्थात ग्राहक और दुकानदार के बीच अगर सच्चा विश्वास हो तो दोनों ही लाभ प्राप्त करते हैं एक तो गुणवता और दूसरा उत्तम सेवा।

उन्होंने आगे कहा कि यूको बैंक के पास ग्राहकों के लिए वो सारी सुविधाएं व प्रोडक्टस उपलब्ध हैं जो अन्य बैंकों के पास हैं। ग्राहकों के हित के लिए हमारी संस्था अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करने हेतु प्रतिबद्ध है। हमारी पहचान या छवि ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवा प्रदान करने से है।

सभा को अग्रसर करते हुए मुख्य प्रबंधक श्री एसएन श्रीवास्तव ने कहा कि इन 77 वर्षों की यात्रा में हमारे बैंक ने अनेक उतार-चढ़ाव देखें हैं और हमने हर चुनौतियों का डटकर मुक़ाबला करते हुए सफलता हासिल की है। उन मुश्किल और कठिन दिनों में हमारे ग्राहकों ने हमारा दामन थामा और इस बैंक को अपने परिवार की तरह सींचा। हम उन ग्राहकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिन्होंने हमारी परमप्रिय संस्था के प्रति अटूट विश्वास जगाया। आज हम उनके विश्वास का सम्मान करते हैं। हम सम्मान करते हैं उन ग्राहकों की श्रद्धा (भावना) का जिन्होंने हमारे साथ बने रहने और जुड़ने का निर्णय लिया।

इस अवसर पर वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुमित कुमार ने भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की जिससे ग्राहकों को लाभ हुआ। इसके आगे उन्होंने ग्राहकों को लेनदेन के समय सतर्कता बरतने की भी बात कही।

यूको बैंक के 77वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर स्टाफ सदस्यों द्वारा पैदल मार्च का आयोजन : एक झलक

यूको बैंक की 77वें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर दिनांक 5 जननवारी 2020 को बैंक के स्टाफ सदस्यों ने पैदल मार्च का आयोजन किया और स्थानीय लोगों के बीच में यह संदेश दिया कि यूको बैंक ग्राहकों की सेवा के लिए निरंतर तत्पर है। आज यूको बैंक ग्राहकों की सेवा की बदौलत ही गौरवपूर्ण 77 वर्ष पूरा किया है।

आज की तारीख में यूको बैंक नित नए उत्पाद के साथ ग्राहकों सम्मुख उपस्थित है और उन्हें सर्वोत्तम सेवा देने के लिए कृतसंकल्प है।

"हिंदी को विश्व भाषा बनाने हेतु यूको बैंक कृतसंकल्प"

विश्व हिंदी दिवस की सभा को संबोधित करते हुए उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़

भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जानेवाली भाषा है। किसी भी देश के लिए देश की भाषा ही उसकी धड़कन होती है। अपनी भाषा में काम करने से ही राष्ट्र का सम्मान होता है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बहुत ही आसान है। हम जो बोलते हैं वही लिखते हैं और जो लिखते हैं वही बोलते हैं। यह हिंदी की अपनी सरलता और वैज्ञानिकता है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहजता, सरलता और सुगमता से की जा सकती है। आज हमें हिंदी को सरलतम रूप में अपनाने की आवश्यकता है।

हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। आज भारतीय संस्कृति, सभ्यता, साहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी भाषा से ही भारतीय संस्कृति की अविरल धारा जीवंत तथा सुरक्षित है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के बीच जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। अपनी भाषा और अपना देश ही गौरव का संदेश देता है।

उक्त बातें यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने विश्व हिंदी दिवस की सभा को संबोधित करते हुए अंचल कार्यालय, पटना और क्षेत्र निरीक्षणालय, पटना के सभी यूकोजन के समक्ष कहा।

उक्त सभा को संबोधित करते हुए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने कहा कि राजभाषा हिंदी के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा रोजगार का सृजन कर दिया जाए तो हिंदी के प्रति अधिकांश लोगो का झुकाव होगा। भाषा हमेशा ही जोड़ने का कार्य करती है। हर किसी को

विश्व हिंदी दिवस 2020 में उपस्थित यूको बैंक के अधिकारीगण

अपनी भाषा प्यारी होती है। वर्तमान में हिंदी की पहचान एक विश्व पटल पर छायी हुई है।

श्री कुमार ने आगे कहा कि आज बाजारवाद की दुनिया में भाषा बहुत ज्यादा मायने रखती है। भाषा का बाजार में विराजमान होना जरूरी है। आज वही भाषा चलती और विकसित होती है जिसे बाजार अपना लेता है। आज की हिंदी अधिकांश भारतीयों की जुबां पर है। आज अधिकांश प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया की भाषा हिंदी हो चुकी है। अन्य भाषाओं की फिल्मों को हिंदी में डबिंग कर दिखाया जाता है और हिंदी भाषा से उन फिल्मों को अधिकांश मुनाफा हो रहा है। एक राष्ट्र के लिए एक भाषा का भी होना जरूरी है। जिससे कि विश्व स्तर पर हमारी पहचान बन सके।

उक्त कार्यक्रम में अंचल कार्यालय, पटना के मुख्य प्रबंधक श्री एस एन श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी जैसी आसान, लचीली और सुग्राही भाषा शायद ही कोई हो जो भारत के आम जनमानस के हित में हो। आज हिंदी विश्व के अन्य देशों की भी आधिकारिक भाषा बन चुकी है। हिंदी ने अपनी पहचान अपनी विशेष कार्यशैली के आधार पर बनाई है।

प्रिंट मीडिया की सुर्खियों में: यूको बैंक द्वारा आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता

हिन्दुस्तान • 11 जनवरी 2020 — 03

लाइव फटाफट

यूको बैंक के अंचल कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद पदाधिकारी।

हिंदी भाषा है देश की धड़कन : यूको बैंक

पटना। हिंदी भाषा देश की धड़कन है। अपनी भाषा में ही काम करने से ही राष्ट्र का सम्मान होता है। यह बातें यूको बैंक के अंचल कार्यालय में बैंक के उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने कहीं। वे अंचल कार्यालय में आयोजित सभा में विश्व हिंदी दिवस 2020 की सभा को संबोधित कर रहे थे। यूकोजन को संबोधित करते हुए अंचल कार्यालय पटना के सहायक महाप्रबंधक व उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार ने कहा कि राजभाषा हिंदी के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा रोजगार का सृजन किया जाए तो हिंदी के प्रति लोगों का झुकाव बढ़ेगा।

पटना प्रभात

अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है हिंदी

पटना. भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है. हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जानेवाली भाषा है. किसी भी देश के लिए देश की भाषा ही उसकी धड़कन होती है. अपनी भाषा में काम करने से ही राष्ट्र का सम्मान होता है. ये बातें यूको बैंक के अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने शुक्रवार को विश्व हिंदी दिवस की सभा को संबोधित करते हुए कहीं. उन्होंने कहा कि हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है. हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बहुत ही आसान है. राठौर ने अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहजता, सरलता और सुगमता से की जा सकती है. बैंक के उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार ने कहा कि राजभाषा हिंदी के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा रोजगार का सृजन कर दिया जाये तो हिंदी के प्रति अधिकांश लोगों का झुकाव होगा. भाषा हमेशा ही जोड़ने का कार्य करती है. वर्तमान में हिंदी की पहचान एक विश्व पटल पर छायी हुई है.

राष्ट्रीय सहारा

पटना • शनिवार • 11 जनवरी • 2020

www.rashtriyasahara.com

यूको बैंक अंचल कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस पर कार्यक्रम

पटना (एसएनबी)। भाषा, भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। किसी भी देश के लिए देश की भाषा ही उसकी धड़कन होती है। अपनी भाषा में काम करने से ही राष्ट्र का सम्मान होता है। यूको बैंक अंचल कार्यालय में शुक्रवार को आयोजित विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रम में बैंक के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौर ने ये बातें कही। उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार ने कहा कि राजभाषा हिंदी के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा रोजगार का सृजन कर जाए तो हिंदी के प्रति अधिकांश लोगों का झुकाव होगा। भाषा हमेशा से

जागरण सिटी पटना

यूको बैंक में मनाया गया विश्व हिंदी दिवस

जासं, पटना : हिंदी दुनिया की सबसे सरल भाषा है। इसे विश्व की भाषा बनाने के लिए यूको बैंक ने संकल्प लिया है। ये बातें विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में यूको बैंक के उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने कहीं। उन्होंने कहा कि भाषा भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। हिंदी अन्य भाषाओं से काफी सशक्त है। यह एक समृद्ध भाषा है। इसमें विश्वस्तरीय बनने के सभी गुण मौजूद हैं।

देश को एक सूत्र में पिरोती है हिंदी

राजभाषा हिंदी को विभिन्न माध्यमों से कार्यान्वित करने, सभी कर्मचारियों के बीच प्रेरणा और प्रोत्साहन के साथ सौहार्दमय वातावरण में राजभाषा का विकास करने की

मंचासीन उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़, केंद्रीय राजस्व विभाग, पटना के उप निदेशक (राजभाषा) श्री शाहबाज अहमद, सहायक महाप्रबंधक व उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार और वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ सुनील कुमार

भावना जागृत करने और उनके बीच राजभाषा हिंदी को अभिव्यक्ति का सरल माध्यम बनाने के लिए जिससे कि अधिकांश लोगों में हिंदी के प्रति रूचि पैदा हो और जैसाकि भारतीय संविधान के अनुच्छेद- 351 में लिपिबद्ध है - "संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके.....।

इसी को ध्यान में रखते हुए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना द्वारा दिनांक- 24 जनवरी, 2020 को बैंक, नराकास, पटना के सभी सदस्य बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ के कर-कमलों से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

विभिन्न बैंकों से आए प्रतिभागियों की सभा को संबोधित करते हुए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना के उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने कहा कि हिंदी ही ऐसी भाषा है जो पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। अधिकांश हिंदीत्तर भाषियों ने हिंदी के माहौल में रहते-रहते हिंदी सीख ली। हिंदी इतनी सुलभ, सरल, सुगम और सुग्राही भाषा है कि प्रत्येक व्यक्ति इसे आसानी से समझ सकता है, बोल सकता है, लिख सकता है और इस भाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। हिंदी भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक प्रामाणिक भाषा है। आज भारत में संचालित होनेवाली अधिकांश कंपनियाँ अपने उत्पादों (प्रोडक्टस) को हिंदी माध्यम से प्रसारित व प्रचारित करती हैं क्योंकि उन्हें मालूम है कि यहाँ के अधिकांश उपभोक्ता हिंदी भाषा को आसानी से समझते हैं और हिंदी का बाजार बहुत बड़ा है। आज हिंदी हमारे दिल की भाषा बन चुकी है।

यूको बैंक द्वारा दिनांक- 24.01.2020 को आयोजित "आशुभाषण प्रतियोगिता" में विभिन्न बैंकों से पधारे प्रतिभागीगण

पटना अंचल के सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख श्री मनोज कुमार ने कहा कि विगत वर्षों में राजभाषा हिंदी का वृहत रूप में प्रचार-प्रसार हुआ है। लोगों में हिंदी के प्रति झुकाव व निष्ठा की भावना जागृत हुई है। सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी इसकी ख्याति बढ़ी है। आज आशुभाषण प्रतियोगिता के तहत वर्तमान परिप्रेक्ष्य के संदर्भित विषयों को शामिल किया गया है जिसपर सभी प्रतिभागियों ने अपनी बातों को कभी सरलता के साथ हिंदी माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। समय, काल, विषय, स्थान, दशा और दिशा के अनुसार शब्दों और वाक्यों को परिमार्जित किया जाता है ताकि उस समय के परिवेश के अनुरूप उसे संप्रेषित किया जा सके।

उक्त प्रतियोगिता के लिए निर्णायक के रूप में आमंत्रित केंद्रीय राजस्व विभाग, पटना के उप निदेशक (राजभाषा)

श्री शाहबाज अहमद ने कहा कि आज पूरे भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी तक राजभाषा हिंदी बोली और समझी जाती है। हिंदी भारत को एक भाषा के सूत्र में पिरोने का काम करती है। यह भाषा अपने आप में सशक्त और समृद्ध है। यह भारत के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह सुमधुर और अनुपम भाषा है। उक्त कार्यक्रम का मंच संचालन यूको बैंक, अंचल कार्यालय,पटना में पदस्थापित वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ.सुनील कुमार ने किया।

प्रिंट मीडिया की सुर्खियों में: यूको बैंक द्वारा आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता

प्रभात खबर

एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है हिंदी

पटना. हिंदी ही ऐसी भाषा है जो पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है. अधिकांश हिंदीत्तर भाषियों ने हिंदी के माहौल में रहते-रहते हिंदी सीख ली. ये बातें यूको बैंक के उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौर ने शनिवार को पटना के सभी सदस्य बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए कहीं. उन्होंने बताया कि हिंदी इतनी सुलभ, सरल, सुगम और सुग्राही भाषा है कि प्रत्येक व्यक्ति इसे आसानी से समझ सकता है, बोल सकता है, लिख सकता है और इस भाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है. बैंक के सहायक महाप्रबंधक मनोज कुमार ने कहा कि विगत वर्षों में राजभाषा हिंदी का वृहत रूप में प्रचार-प्रसार हुआ है. लोगों में हिंदी के प्रति झुकाव व निष्ठा की भावना जागृत हुई है. केंद्रीय राजस्व विभाग के उप निदेशक (राजभाषा) शाहबाज अहमद ने कहा कि आज पूरे भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी तक राजभाषा हिंदी बोली और समझी जाती है. यह भाषा अपने आप में सशक्त और समृद्ध है. कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ. सुनील कुमार ने किया.

शनिवार • 25 जनवरी 2020

हिन्दुस्तान

यूको बैंक में आशुभाषण प्रतियोगिता

पटना। यूको बैंक के पटना अंचल कार्यालय में शुक्रवार को बैंक, नराकास पटना के सभी सदस्य बैंकों व वित्तीय संस्थाओं के कर्मियों के बीच आशुभाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। बैंक के उप महाप्रबंधक व अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने कहा कि हिंदी भारत को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा है। पटना अंचल के सहायक महाप्रबंधक व उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार ने कहा कि बीते वर्षों में राजभाषा हिंदी का काफी प्रचार-प्रसार हुआ है। केंद्रीय राजस्व विभाग पटना के उप-निदेशक (राजभाषा) शाहबाज ने कहा कि काश्मीर से कन्याकुमारी तक राजभाषा हिंदी बोली और समझी जाती है।

दैनिक भास्कर, पटना, रविवार, 26 जनवरी, 2020 | 07

यूको बैंक में आशुभाषण प्रतियोगिता

पटना | यूको बैंक अंचल कार्यालय में आशुभाषण प्रतियोगिता हुई। विभिन्न बैंकों से आए प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। उद्घाटन करते हुए उपमहाप्रबंधक सह अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने कहा कि हिंदी भाषा एक सूत्र में पिरोती है। सहायक महाप्रबंधक मनोज कुमार, केंद्रीय राजस्व विभाग के उप निदेशक राजभाषा शाहबाज अहमद, वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा डॉ. सुनील कुमार मौजूद थे।

आज — पटना महानगर — आज

देश को एक सूत्र में पिरोती है हिन्दी : दिलीप

पटना (आससे)। राजभाषा हिन्दी को विभिन्न माध्यमों से कार्यान्वित करने, कर्मचारियों के बीच प्रेरणा और प्रोत्साहन के साथ सौहार्दमय वातावरण में राजभाषा का विकास करने की भावना जागृत करने और उनके बीच राजभाषा हिंदी को अभिव्यक्ति का सरल माध्यम बनाने के लिए जिससे कि अधिकांश लोगों में हिंदी के प्रति रूचि पैदा हो और जैसा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद-351 में निहित है- 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रचार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। इसी को ध्यान में रखते हुए यूको बैंक, अंचल कार्यालय द्वारा शुक्रवार को बैंक, नराकास, पटना के सभी सदस्य बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं के लिए आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख दिलीप सिंह राठौड़ ने दीप प्रज्वलित कर किया।

श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने कहा कि हिंदी ही ऐसी भाषा है जो पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। अधिकांश हिंदीतर भाषियों ने हिंदी के माहौल में रहते-रहते हिंदी सीख ली। हिंदी इतनी सुलभ, सरल, सुगम और सुग्राही भाषा है कि प्रत्येक व्यक्ति इसे आसानी से समझ सकता है, बोल सकता है, लिख सकता है और इस भाषा में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। पटना अंचल के सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख मनोज कुमार ने कहा कि विगत वर्षों में राजभाषा हिंदी का वृहत रूप में प्रचार-प्रसार हुआ है। लोगों में हिंदी के प्रति झुकाव व निष्ठा की भावना जागृत हुई है। सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी इसकी ख्याति बढ़ी है। प्रतियोगिता के लिए निर्णायक के रूप में आमंत्रित केंद्रीय राजस्व विभाग, पटना के उप निदेशक (राजभाषा) शाहबाज अहमद ने कहा कि आज पूरे भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी तक राजभाषा हिंदी बोली और समझी जाती है। मंच संचालन बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डा. सुनील कुमार ने किया।

यूको बैंक में कार्यक्रम

कोरोना वायरस से घबड़ाना नहीं, इसे हराना है। डर कर नहीं, डट कर मुक़ाबला करें

खुद रहें सुरक्षित, दूसरों को भी रखें सुरक्षित

नॉवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) के प्रकोप को रोकने के लिए निम्नलिखित उपाय/बचाव करें: -

1. शाखा / कार्यालय परिसर में प्रवेश करने से पहले अपने हाथों को सैनिटाइजर से सैनिटाइज़ कर लें और ग्राहकों को भी ऐसा करने को कहें। इस हेतु शाखा परिसर के अंदर सैनिटाइजर रखें। साथ ही साथ ग्राहकों की सेवा का त्वरित निपटान करें और सेवा प्रदान करते समय (ग्राहको से) कम से कम एक (1) मीटर की दूरी बनाएँ रखें।

2. ज्यादा से ज्यादा से ग्राहकों को "डिजिटल बैंकिंग" (ऑनलाइन बैंकिंग/मोबाइल बैंकिंग/ऑनलाइन शॉपिंग/यूपीआई/यूएसएसडी/ आईएमपीएस/एनईएफ़टी/डेबिट कार्ड/ क्रेडिट काड्र्स आदि) के साथ लेनदेन करने के लिए प्रोत्साहित करें इस हेतु उनकी सहायता भी करें। ग्राहकों की समस्याओं का निदान विडियो कॉल, फोन या दूरभाष के माध्यम से करें। परंतु बैंक द्वारा जारी दिशानिर्देशों के अनुसार ही कार्य करें।

3. अपने कार्यस्थल एवं बाहर जाने के लिए अपने खुद की वाहन/गाड़ी का उपयोग करें। पब्लिक ट्रांसपोर्ट का कम से कम उपयोग करें। अपने मुँह को रूमाल/मास्क/ कपड़े से ढँके। ज्यादा भीड़–भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें। कम से कम लोगों से मुलाक़ात करें। फिलहाल, विदेश यात्रा या अन्य यात्रा पर जाने से बचें।

4. शाखा/कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों के लिए ग्लप्स, सैनिटाइजर, डिटोल, मास्क आदि की समुचित व्यवस्था करें। डिस्पोज़ेबल ग्लास व कप का उपयोग करें। हाजिरी बनाने के लिए बायोमेट्रिक का उपयोग न करें। साथ ही साथ शाखा/कार्यालय परिसर को विशेष रूप से स्वच्छ व साफ-सुधरा रखें।

5. अगर किसी स्टाफ सदस्य के परिवार का कोई सदस्य/पड़ोसी विदेश यात्रा से आया हो तो इसकी जानकारी रखें और जरूरी एहतिहात भी बरतें।

6. कुछ समय के अंतराल पर 20 सेकेंड्स तक अल्कोहल आधारित हैंड वाश या साबुन और पानी से हाथ धोएँ। फिलहाल, किसी से भी हाथ मिलाने की बजाए नमस्कार करें।

7. अगर किसी भी स्टाफ सदस्य को बुखार, खाँसी और साँस लेने में कठिनाई है तो तुरंत ही जाँच करवाएँ।

8. शाखाओं में ग्राहकों की भीड़ को कम करने के लिए उन्हें सीमित संख्या में आने का निर्देश दें ताकि आप भी सुरक्षित रहें और वे ही सुरक्षित रहें। इस हेतु उनसे सहयोग कार्य के लिए आग्रह करें।

9. बार-बार आँख और नाक को न छूएँ। उपयोग किए गए टिसू पेपर बंद कूड़ेदानी में डाल दें।

10. "ओपेन डोर पॉलिसी" के तहत शाखा/केबिन/ निकास के दरवाजे को केहूनी से खोलें हैंडल को पकड़ने से बचें।

11. किसी भी प्रकार से अफवाह से बचें । संयम से काम लें। हम इस संक्रमण से स्वयं को एवं दूसरों को बचाने हेतु हर संभव प्रयास करें। समय-समय पर सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों का अनुपालन करें।

12. ग्राहकों के साथ कलम,पेंसिल, स्टैपलर आदि (स्टेशनरी सामग्री) को साझा करते वक्त ज्यादा सावधानी बरतें।

13. यह आवश्यक है कि वैश्विक महामारी के इस वातावरण में मानवता की जीत हो। भारत की जीत हो।

15. भारत पूरी शक्ति के साथ आगे बढ़े, यह संकल्प लेकर हम आवश्यक संयम का पालन करें जिससे हम बचें, देश को बचाएं, विश्व को बचाएं।

ध्यानाकर्षण: पटना अंचलाधीन मुद्रा तिजोरी प्रभारी यथा – पटना मुख्य शाखा, मुजफ्फरपुर मुख्य शाखा और गया मुख्य शाखा विशेष रूप से एहतिहात बरतते हुए सभी उपलब्ध उपकरणों एवं परिसर को सैनिटाइज़ कर लें। मुद्रा तिजोरी परिसर में प्रवेश करने से पहले अपने हाथों को सैनिटाइजर से सैनिटाइज़ करने के बाद ही कैश का कार्य करें । कार्य करते वक्त अपने हाथों में ग्लप्स, मास्क, सैनिटाइजर आदि का उपयोग करें। इस सूचना से सभी को अवगत कराएँ।

हम सब मिलकर कोरोना वायरस से मिलकर लड़ सकते हैं। सिर्फ हमें आत्मसंयम से कार्य करना है। इसे रोकने के लिए "आप हमारी सहायता करें, हम आपकी सहायता करेंगे" के आदर्श वाक्य पर कार्य करें। सबसे पहले अपनी बचाव आप स्वयं करें और दूसरों की भी बचाव के लिए आगे आएँ। समय-समय पर सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों का अनुपालन करें। इस आपदा की स्थिति से निपटने के लिए हम सभी को अपने पूर्ण दायित्व के साथ आगे बढ़ना होगा। ऐसी स्थिति में हमें एहतियात बरतने की जरूरत है। घबराने की जरूरत नहीं है। सावधानी बरतने की जरूरत है।

कोरोना वायरस की कहानी - वर्तमान व भविष्य

उत्पत्ति

अरुण कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक(सुरक्षा)

वर्ष 2019 के आखिरी महीने की बात है जब चीन के वुहान शहर में कोरोना वायरस का प्रकोप शुरू हुआ तो आदतन चीन ने इसे दबाना शुरू कर दिया। जब पानी सिर से ऊपर बहने लगा तो इसके समुचित इलाज और निदान के कदम जाने शुरू होने लगें। इसी क्रम में इसकी पहचान होने लगी की आखिर क्यों ऐसा हो रहा है? 23 जनवरी, 2020 को वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलोजी के कोरोना वायरस के विशेषज्ञ शी झेंग ली ने पाया की कोविड-19 की जीनोम सिक्येंसिंग (आनुवांशिक अनुक्रम) चमगादड़ों में पाए जानेवाले वायरस (विषाणु) से 96.2 प्रतिशत मिलती-जुलती है और पिछले दिनों सार्स (सीवियर एक्यूट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम) फैलाने वाले कोरोना वायरस से 79.5 प्रतिशत मिलता है। चाइनीज़ मेडिकल जर्नल के शोध से पता चला कि इस वायरस का जीनोम अनुक्रम 87.6 से 87.7 प्रतिशत चीनी प्रजाति के एक अन्य चमगादड़ों (हार्सशू) से मिलता है। हालांकि अभी भी इस बात के पुख्ता प्रमाण नहीं मिले हैं कि यह महामारी इस छोटे से स्तनधारी की वजह से फैला है।

पैंगोलिन भी वाहक कोरोना वायरस पैंगोलिन में भी पाया गया है। दुनिया भर में सबसे ज्यादा तस्करी इसी जीव की होती है। इसकी त्वचा से परंपरागत चीनी औषधि तैयार की जाती है।

- इस जीव से आनेवाले विषाणु कुछ गंभीर किस्म की बीमारियां फैलाते हैं।
- चमगादड़ 60 अलग-अलग वायरसों का भंडार होता है।
- चमगादड़ आपस में एक-दूसरे से इतने करीब रहते हैं कि विषाणुओं को आसानी से दूसरे तक जाने में सुविधा रहती है।

उड़ान बनाती है महान

पाँच दर्जन वायरसों के वाहक चमगादड़ आखिर इनसे महफूज कैसे रहते हैं। विशेषज्ञों की माने तो लगातार उड़ते रहने से शारीरिक कार्यप्रणाली इनके प्रतिरक्षी तंत्र को बहुत मजबूत बना देती है। इनका प्रभावी प्रतिरक्षी तंत्र इतने खतरनाक विषाणुओं से साथ रहने में मददगार बनाता है।

इनकी यह खूबी विषाणुओं को भी और मजबूत बनाने में अहम भूमिका निभाती है।

खतरनाक विषाणुओं का भंडार है चमगादड़

जूनोटिक डिजीज (ऐसी बीमारी जो जानवरों से मनुष्य में फैलती है) विषाणु सामान्य तौर पर खास प्रजाति पर आश्रित रहते हैं। करीब सभी विषाणु जो अन्य को संक्रमित करते हैं, मनुष्य के लिए नुकसानदेय नहीं होते हैं। ऐसे विषाणुओं की बहुत कम संख्या होती है जो दूसरी प्रजातियों (जैसे- मनुष्य) को संक्रमित करते हैं। यद्यपि सभी जूनोटिक डिजीज रोग का खतरा नहीं होता है। परंतु न्यू साइंटिस्ट पत्रिका के अनुसार दुनिया भर में हर साल 2.5 अरब लोग इससे बीमार पड़ते हैं और करीब 27 लाख लोग इनसे मारे भी जाते हैं।

पर्यावरण में भूमिका

चूँकि चमगादड़ का कंकाल हमारे जैसा ही होता है जो हमारी पूर्वज साझेदारी का द्योतक है। चमगादड़ पर्यावरण के लिहाज से अहम है। दुनियाभर में इनकी 1300 प्रजातियाँ हैं जो समस्त स्तनधारियों का बीस प्रतिशत है। मानव सभ्यता के शुरुआत से ही यह जीव हमारे निकट रहा है। ऐसा माना जाता है कि पौधों की पाँच सौ प्रजातियाँ परागण के लिए चमगादड़ों पर ही आश्रित हैं। चमगादड़ के अपशिष्ट बहुत कीमती होते हैं। उन्हें बहुत प्रभावी प्राकृतिक उर्वरक माना जाता है। चमगादड़ कीटों को खुराक बनाकर फसल नुकसान और कीटनाशकों से बचत के मद में बड़ी मदद करते हैं। सिर्फ अमेरिका में इनसे करीब 3.7 अरब डॉलर की राशि बचायी जाती है।

ऐसे संक्रमित हो रहे हैं मनुष्य :-

1. संपर्क: मानव कोशिका की झिल्ली के रिसेप्टर से जुडने के लिए यह वायरस लंबे एस प्रोटीन का उपयोग करता है। ऐसे मिलन से कोशिका भ्रमित
2. होती है कि यह कोई खतरा नहीं है। लिहाजा वायरस कोशिका में प्रवेश कर जाता है।
3. प्रवेश: कोशिका में वायरस के प्रवेश की सटीक प्रणाली अभी ज्ञात नहीं है फिर भी दो प्रक्रियाएँ होती हैं।
   - ✓ इंडोसाटोसिस प्रक्रिया के तहत कोशिका वायरस को निगल जाती है।
   - ✓ मानव कोशिका से जुडने के बाद वायरस कोशिका द्रव्य में अपने तत्व छोड़ता है।
4. संक्रामण: प्रवेश करने के बाद वायरस अपने जेनेटिक तत्त्व छोड़ता है। कोशिका द्रव्य में वायरस द्वारा छोड़े जाने वाला यह एकल कुंडलित आरएनए होता है।
5. द्विगुणन: वायरस कोशिका को हाईजैक कर लेता है और अपने जेनेटिक तत्त्व का द्विगुणन शुरू करने लगता है। इसके बाद कोशिका की मशीनरी का उपयोग करके नए वायरस कण को तैयार करता है।
6. निष्कासन: द्विगुणन और प्रसारण के बाद एक्सोसाईटोसिस प्रक्रिया के तहत वायरस कोशिका से निकल जाता है। जिससे यह अन्य कोशिकाओं को अपना शिकार बना सके। इसी दौरान बायरल वृद्धि के दौरान तनाव में कोशिका डैम तोड़ देती है।

सतह पर वायरस का व्यवहार:-

- कोरोना वायरस समेत ज्यादा वायरस 50 से 200 नैनोमीटर लंबे होते हैं। सही मायने में ये नैनो पार्टिकल्स कहलाते हैं। लिहाजा जिस सतह पर ये होते हैं उनसे इनका बहुत जटिल नाता होता है।

- खांसी और छींक की छोटी बूंदें जब कसी भी सतह पर पड़ती है तो शीघ्र ही सूख जाती है लेकिन इसमें मौजूद वायरस सक्रिय होते हैं।
- लकड़ी, धागे और त्वचा वायरस के साथ मजबूती से संपर्क में आते हैं, जबकि स्टील, पोर्सीलेन और टेफ़्लॉन जैसी प्लास्टिक का गुण इसके सर्वथा विपरीत होता है। जितनी
- चिकनी सतह होगी, उससे वायरस के चिपकने की आशंका उतनी ही कम होगी।
- खुरदरी सतह वायरस को दूर रखती है, लेकिन इसका कतई मतलब न निकालें कि ये पूरी तरह सुरक्षित है।

• त्वचा आदर्श सतह साबित होती है। इसकी मृत कोशिकाओं की सतह पर मौजूद प्रोटीन और वसीय अम्ल वायरस संपर्क में आते हैं।

• जब आप किसी स्टील की ऐसी सतह को छूते हैं जिस पर वायरस मौजूद होता है तो वायरस आपकी त्वचा से चिपककर आपके हाथ पर आ जाता है।

• इसके बावजूद अभी तक आप संक्रमित की श्रेणी में नहीं आएंगे। लेकिन जैसे ही आप हाथ से खुद के चेहरा छूएँगे तो वायरस आपके चेहरे पर दस्तक दे देगा।

• अब वायरस आपके अंदरूनी हिस्सों तक नाक, आँख और मुँह के माध्यम से पहुँच बनाने को तैयार है। अब भी आपके बचने की संभावना है। अगर आपका प्रतिरक्षी तंत्र वायरस को मार देता है तो आप सुरक्षित हैं, अन्यथा संक्रमित होने में देर नहीं होगी।

• ऐसा माना जा रहा है कि कोविड-19 अनुकूल सतहों पर घंटों सक्रिय रह सकता है। संभवतया ये अवधि एक दिन की भी हो सकती है।

कोरोना के इलाज की नई उम्मीद
(डिकोय प्रोटीन से रूक सकता है संक्रमण):-

नॉवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) से लड़ने के लिए वैज्ञानिक लगातार प्रयासरत हैं। कई देशों में इससे लड़ने के लिए दवा और टीका बनाने का कार्य प्रयास तेजी से चल रहा है। हालांकि अब कोरोना वायरस संक्रमण के खिलाफ वैज्ञानिकों को एक नई सोच नजर आ रही है। उनके अनुसार लोगों को डिकोय प्रोटीन (लुभाने/फँसाने वाला प्रोटीन) का इंजेक्शन लगाकर इस वायरस का संक्रामण रोका जा सकता है। यूनिवर्सिटी ऑफ लिसेस्टर के शोधकर्ताओं ने इस दिशा में काम करना शुरू कर दिया है।

नकली से लुभाने की अवधारणा:- वैज्ञानिकों का मानना है कि कोविड-19 रोग पैदा करने वाला वायरस शरीर से फेफड़ों और वायुमार्ग की कोशिकाओं की सतह पर रिसेप्टर (ग्राही) के द्वारा प्रवेश करता है, जिसे एसीई-2 रिसेप्टर कहते हैं। ये रक्त प्रवाह में प्रवेश द्वार उपलब्ध कराने के साथ संक्रमण को सुगम बनाते हैं। अब वैज्ञानिक चाहते हैं कि वायरस को लुभाने के लिए इसकी 'नकल' (फेक) इंजेक्ट की जाए ताकि वायरस फेफड़ों के ऊतकों तक आने की वजाय एक दवा से चिपक जाए।

भ्रमित करने पर आधारित:- यूनिवर्सिटी ऑफ लिसेस्टर के शोधकर्ताओं ने ऐसा प्रोटीन विकसित करने की दिशा में काम शुरू किया है जो न सिर्फ एसीई-2 का नकल हो बल्कि वायरस के लिए और भी ज्यादा आकर्षक हो। इसके पीछे सिद्धान्त है कि यदि वाइरस शरीर में प्रवेश करेगा तो एसीई-2 की नकल वायरस को भ्रमित कर देगी और यह उसे सोख लेगा, जिससे कोविड-19 के लक्षण विकसित होने की रोकथाम होगी। इस प्रयोग को कोरोना वायरस जैसे महामारी को रोकने के लिए उम्मीद की किरण के रूप में देखा जा रहा है।

क्या है एसीई-2 रिसेप्टर:- एसीई-2_रिसेप्टर पूरे शरीर की कोशिकाओं पर पाए जाते हैं लेकिन फेफड़ों और वायुमार्ग (एयरवेज) पर पाए जानेवाले ये रिसेप्टर कोरोना वायरस के खास निशाने पर होते हैं। शरीर के अन्य भागों में पाए जानेवाले ये रिसेप्टर एंजिओटेन्सिन कवर्टिंग एंजाइम (एसीई) को कंट्रोल कर ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने के काम में आते हैं। यह इंजाइम हृदय और रक्त प्रवाह से जुड़ा है। हालांकि फेफड़े के भीतर इसके कार्य को लेकर कोई विशिष्ट जानकारी नहीं है।

संक्रमण क्षमता रोकने की कोशिश:- वैज्ञानिक इस कोशिश में भी जुड़े हैं कि कोरोना वायरस के लिए प्रभावी तौर पर रास्ता ही बंद करने को एसीई-2 से ही छुटकारा पा लिया जाए। लेकिन इसके खतरनाक साइड इफेक्ट भी हो सकते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ लिसेस्टर के प्रोफेसर निक

ब्रिडल का मानना है कि 'वायरस को बांधने के लिए एक आकर्षक डिकोय प्रोटीन बनाकर उसकी संक्रमण क्षमता को रोक दी जाए और कोशिकाओं के सतह पर मौजूद रिसेप्टरों के कार्य को सुरक्षित कर दिया जाए। वास्तव में होता यह है कि फेफड़ें की कोशिकाओं के रिसेप्टरों तथा अन्य ऊतकों को 'हाईजैक' कर वायरस पूरे शरीर में फैल जाता है और रोग पैदा करता है। अगर यह तरीका कामयाब रहा तो पूरी दुनिया में फैले इस घातक रोग के नए मामलों को रोकने की संभावना बनेगी।

नोवेल कोरोना वायरस कैसे करता है शरीर में प्रवेश:- वैज्ञानिक जर्नल सेल के मार्च महीने में जर्मन शोधकर्ताओं के आलेख के अनुसार, नोवेल कोरोना वायरस मानव शरीर में प्रवेश के लिए रिसेप्टर पर निर्भर होता है। वैज्ञानिकों ने 2002 के सार्स आउटब्रेक के दौरान भी पाया कि सारस वायरस के भी मानव शरीर को भेदने में ये रिसेप्टर काफी अहम हैं। यह सच है कि सार्स और कोरोना वायरस आपस में बहुत ही करीब हैं। चूँकि यह बात सामने आई है कि एसीई-2 रिसेप्टर वायरस का एंट्री प्वाइंट है, इसीलिए वैज्ञानिक इसे ही वायरस को रोकने के लिए तकनीक के रूप में अपनाना चाहते हैं।

उम्मीद पर टिकी निगाहें:- कुछ अन्य वैज्ञानिकों का यह भी मानना है कि लोगों को अपनी दवाएं लेना बंद नहीं करनी चाहिए क्योंकि उपर्युक्त दावों का कोई भी ठोस प्रमाण नहीं है। एसीई-2 का स्तर कम करने के अनपेक्षित नतीजे हो सकते हैं, खासकर जब स्वस्थ लोगों में वे दवाएं रक्तचाप नियंत्रित करने में अहम हों। एसीई-2 फेफड़ों को वायरस जन्य नुकान से प्रभावी संरक्षण भी देता है। इसीलिए कोविड-19 जैसे फेफड़ें के संक्रमण वाले रोग में एसीई-2 का स्तर घटाना समस्या पैदा कर सकता है। इसका उदाहरण 2008 में चूहों पर किया गया एक अध्ययन है। एसीई-2 से 'मुक्त' चूहे में सार्स वायरस के संक्रमण से साँस की गंभीर समस्या पैदा हो गई। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सार्स और कोविड-19 वायरस एक जैसे ही हैं। फिलहाल दुनिया भर में कोविड-19 पर सैकड़ों शोध चल रहे हैं और उन्हीं से संभवतः कोई स्पष्ट परिणाम उभर कर आएंगे।

कोरोना: भविष्य के लिए स्वर्णिम अवसर

विशाल कुमार
मुख्य प्रबंधक व शाखा प्रमुख
यूको बैंक, कंकड़बाग शाखा

कहा जाता है कि जब आपदा या विपत्ति आती है तो साथ-साथ स्वर्णिम अवसर भी लेकर आती है। यह जिंदगी की ऐसी पहली रेस है जिसमें रूकाने वाला ही जीतेगा। यानि घर में रहें। सुरक्षित रहें। आज पूरी दुनिया नोवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) की समस्या से जूझ रही है। कल क्या होगा किसने जाना वाली बात है। कोरोना वायरस से आज पूरी दुनिया गम के सैलाब में डूबी है। आगे की जिंदगी कैसी होगी? इसके बारे में सिर्फ कल्पना ही किया जा सकता है और उसी कल्पना के आधार पर आगे की जिंदगी की मंजिल तैयार करनी होगी। जो कल था शायद वो आज अतीत हो गया और अब हमें नई दिशा, नई सोच, नए नियम, नई परिकल्पना को हकीकत में बदलकर उसके साथ जीने को बाध्य होना होगा। हमें नई जिंदगी के लिए ज्यादा से ज्यादा सावधानी भी बरतना होगा। नागासाकी और हिरोशिमा पर परमाणु बम बरसाया गया, भारत के कच्छ जैसे शहर भूकंप में तहस-नहस हो गया, बाढ़ ने विश्व के बहुत सारे शहरों को तबाह किया परंतु उन सभी स्थानों का विकास काफी तीव्र गति से हो गया। महाभारत में पांडवों को

खांडवप्रस्थ अर्थात खंडहर / बंजर भूमि दी गई थी जिसे उनलोगों ने अपनी अथक परिश्रम से उसे इंद्रप्रस्थ में बदल दिया जो कि हस्तिनापुर से भी ज्यादा मनोरम, सुंदर और आकर्षक था। कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप की वजह से हाथ जोड़कर नमस्ते करना वैश्विक चलन बन गया है।

दुनिया भर में हर कोई इस संपर्क रहित भारतीय अभिवादन का अनुसरण कर रहा है।

कोरोना वायरस विश्व की पीड़ा है। अभीतक इसका कोई सार्थक इलाज या औषधि का नहीं पायी गई है। आज मानव जीवन घोर संकट में हैं। विकसित राष्ट्रों में भी इसका कोई इलाज नहीं है। दुनिया की सभ्यताएँ भी अग्नि परीक्षा की स्थिति से जूझ रही हैं। आस्था और विश्वास भी कहीं न कहीं डगमगा रहा है। कहा जाता है कि विपत्ति या संकट के समय धन व संपत्ति की चिंता किए बगैर मानव जीवन की रक्षा ही सर्वोपरी है। मानव जीवन अमूल्य है इसलिए भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था की चिंता किए बिना लॉकडाउन करना उचित समझा। कोरोना से संघर्ष में भारत ने जनसामान्य में त्याग और सर्वोच्च मानववाद के अनुकरणीय आदर्श पेश किए जा रहे हैं। लोकमंगल भारतीय संस्कृति का मूल्य लक्ष्य है। महामारी से जूझते हुए सभी नागरिक अपना कर्तयव्य निभा रहे हैं। हमारे सामाज में बिना किसी भेद-भाव, लाभ-लोभ, सिद्धि-प्रसिद्धि से रहित निःस्वार्थ भावना से जरूरतमंदों की सेवा में लगे हैं। ऐसा करने के लिए किसी सरकार या स्थानीय प्रशासन ने कोई निर्देश नहीं जारी किया है बल्कि ये लोगों की सच्ची श्रद्धा व आत्मीयता है। सब कुछ स्वयं प्रेरित है। ये सब सामाजिक दायित्व बोध से सक्रिय हैं। कोरोना ने लोगों के असीम भावना के साथ अतुलनीय सेवा करने का अवसर प्रदान किया है। ये गृहत्यागी संन्यासी नहीं, बल्कि सच्चे गृहस्थ हैं। ऐसा त्यागभाव दुनिया की अन्य संस्कृतियों के लिए मार्गदर्शी हैं। कोरोना ने मानव मूल्यों को काफी करीब लाया है। आधुनिक अर्थशास्त्र के जन्मदाता एडम स्मिथ ने अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान कहा था जबकि भारतीय संस्कृति यह कहती है कि धन साधन है और मानव कल्याण साध्य। जैसा कि कहा जाता है आदमी वही है, जो आदमी के काम आए। कोरोना वायरस के कारण देश में आया संकट हमें स्वावलंबन की सीख दे रहा है इस समय प्रकृति में बहुत कुछ बदल गया है। पर्यावरण शुद्ध हुआ है। आनेवाले दिनों में स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग, जल एवं वृक्षों का संरक्षण, स्वच्छता, प्लास्टिक से मुक्ति वाला हमारा आचरण हो। संभव हो तो अपने घर की बनी चीजों का उपयोग करें। कोरोना ने आज हमें सबसे बड़ी बात तो यह सीखा दी है कि अपने आप को जानों।

दुनिया में दर्ज हर सभ्यता-समाज को उनमें प्रचलित प्रथाओं और धारणाओं के के आधार पर परिभाषित किया जाता है। यही प्रथाएँ वर्तमान समय में कभी परंपरा तो कभी मान्यताएँ मान के अनुसार हुईं। विज्ञान और गणित के सर्वव्यापी होने से हजारों साल पहले होने के बावजूद इन सभी के उद्गम कारण समान हैं- तर्क, अवलोकन और अनुभव। यही तीन नियम आज आधुनिक विज्ञान के स्तंभ माने जाते हैं।

आज पूरी दुनिया को ठहरा देने वाली महामारी कोविड-19 निकट और दूरगामी प्रभावों को लेकर चिंतित कर रही है। दुनिया के हर पहलू के वैश्वीकरण के चलते इस विपदा का असर भी वैश्विक है। परंतु बहुत कुछ सकारात्मक परिणाम भी फलक पर दिखाई दे रहे हैं। जिस तरह भारत में नोटबंदी ने पूरे देश की ई-कॉमर्स और ऑनलाइन पेमेंट की तरफ अग्रसर किया था, वैसे ही आज की ऑफिस वर्किंग वर्ग अपने-अपने घरों से (वर्क फ्रोम होम) इंटरनेट के माध्यम से अपने कार्य पूरा करने के लिए नया तरीका खोज निकाला है। भारत सहित दुनिया के अन्य देशों में भी लॉकडाउन खत्म होने के वर्क फ्रोम होम को तरजीह दी जाएगी और यह अधिकांश लोगों के लिए वित्तीय तौर पर भी फायदेमंद होगा। लॉकडाउन और कोरोना संकट के बाद भी सामाजिक तौर पर यह परिवार के साथ ज्यादा समय बिताने का मौका और भागदौड़ भारी जिंदगी से राहत भी देगा। सामाजिक और पारिवारिक तौर पर साझा किया हुआ यह समय वर्तमान में शहरी आबादी के बीच व्याप्त सबसे बड़ी मानसिक समस्या जैसे अवसाद और अकेलेपन के प्रकोप को कई गुना कम कर सकता है।

आज सरकारी कर्मचारियों के लिए अवसर है कि कोरोना प्रबंधन से उपजी जन सहानुभूति में वे अपनी जन-विरोधी, भ्रष्ट और औपनिवेशिक प्रतिछाया वाली छवि से निजात पाकर दक्ष, प्रभावशाली श्रेष्ठ कार्यसंस्कृति और जनमित्र की छवि अर्जित का सकें। आज सरकार जनमित्रशाही का हाथ

बढ़ा रही है। संकट के समय जनता को केवल सरकार ही दिखाई देती है। स्वास्थ्यकर्मी, पुलिसकर्मी, प्रशासनिक तबका, सफाईकर्मी, बैंककर्मी के व्यवहार ने आम जनता को अपने करीब लाया है। इन्होंने लोगो में एक अटूट विश्वास जगाया है कि मुसीबत के समय वे देश की जनता की सेवा के लिए आत्मसमर्पित हैं। कोरोना आपदा से निपटने के लिए देश के 'कोरोना वीरों' ने जिस प्रकार लोगों की मदद और सेवा की है उसका आभार शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता।

कोरोना काल के बाद बदल जाएंगे कई नियम:- कोरोना काल के बाद विश्व के कई बड़े शहरों, जहाँ वर्तमान में आईटी सेक्टर सबसे ज्यादा हैं वहाँ पर्यावरण पर भी प्रभाव पड़ेगा। लॉकडाउन के दौरान ही विश्वभर के वैज्ञानिकों ने ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में अत्यधिक कमी रिकॉर्ड की है। ऐसे में भविष्य में ट्रैफिक जाम से बचने वाले समय और प्रदूषण की कमी के फायदे त्वरित दिखने लगेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में "स्टडी फ्रोम होम" अपनाई जा रही है। यह भी संभव है कि कुछ सालों के बाद पठन-पाठन की पद्धति में विशेष परिवर्तन हो जाए। सिर्फ आई टी सेक्टर ही नहीं बल्कि कोरोना से प्रभावित सारे क्षेत्र जैसे अर्थव्यवस्था, व्यापार और उत्पादन ने ऐसे कठिन समय में अप्रभावित रहने और स्थिति अनुकूलन के लिए जितने भी कदम उठाए हैं वे सभी एक सतत जीवाश्म ईंधनमुक्त दुनिया की तरफ बहुत बड़ा समन्वित कदम है। इस विपत्ति की वजह से पूरा विश्व एक बार फिर आपसी सहयोग और सकारात्मक भविष्य निर्माण की ओर बढ़ेगा। कोरोना कहर के बाद वैश्विक आपूर्ति शृंखला के समीकरण बदलना तय है। इसमें देशों की आत्मनिर्भरता की प्रवृति ज़ोर पकड़ेगी और आंतरिक आधार पर अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने में प्रयासरत रहेंगे।

कोरोना संकट के दौरान जीवन मूल्य बदल रहे हैं। हर किसी को व्यक्तिगत रूप से चिंता करना स्वाभाविक है। अधिकांश देशों की भी अपनी चिंताएँ हैं, लेकिन भारत के लोगों को अपने मोहल्ले, गाँव, शहर के अतिरिक्त देश और विश्व की भी चिंता है। दुनिया की लोककल्याण से ध्येयबद्ध इसी संस्कृति की जरूरत है। विश्व को अपना परिवार जानने और उसके अनुसार आचरण देने वाली संस्कृति ही भविष्य की सामाजिक व्यवस्था और मानवीय संबंधों का संचालित करेगी और ऐसी संस्कृति का उत्तराधिकारी भारत है। भविष्य में भारत अपनी आंतरिक जीवन को अधिक पूर्ण, अधिक व्यापक, अधिक वैश्विक और अधिक सार्थक बना सकते हैं। आज इस वैश्विक आपदा में सभी अधिकारी, कार्यपालक, छात्र, व्यवसायी, किसान, मजदूर आदि आश्चर्यजनक ढंग से अपनी जिम्मेवारी निभा रहे हैं।

हमारे अंदर आशावादी विचारों का आगमन हुआ है। और इसी आशा के श्रेष्ठ विचारों के साथ आस्तिक भाव हम सभी में जागा है। अनुशासन और दायित्व निर्वहन हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। कोरोना की इस आपदा को भारत अवश्य पराजित करेगा परंतु इसमें हम सभी का पूर्ण योगदान होना जरूरी है।

कोरोना महामारी से संघर्ष में सभी देशों ने अपने-अपने ढंग से प्रयास किया है। सभी के प्रयास सराहनीय व सम्माननीय हैं, लेकिन भारत के प्रयासों की प्रशंसा विश्व स्वास्थ्य संगठन सहित अनेक देशों और संस्थाओं ने की है। भारत ने दुनिया के अमेरिका सहित अन्य देशों को भी अपना परिवार मानते हुए दवाएं प्रदान की। भारत के प्रयास परिणामोन्मुखी भी हैं। यूरोपीय दृष्टि से भारत को गरीब देश माना जाता रहा है और भारतीय समाज की भीड़ जैसा अनुशासनहीन झगड़ालू समाज। बेशक तमाम विकसित देशों की तुलना में हमारा देश विकासशील है लेकिन भारत के मन में आनतरिक समृद्धि दुनिया के सभी देशों से ज्यादा है । इसी कारण से हमारे देश के लाखों लोग प्रवासी मजदूरों, बेसहारों, असहायों, जरूरतमंदों को भोजन, खाद्यान्न, पानी आदि के वितरण में लगे हुए हैं।

हमारे देश का हर नागरिक दूसरों के दुःख-दर्द को सांझा कर रहा है। वह किसी अनजान पीड़ित की मदद कर अपने-आप में संतुष्टि पाता है। इस आंतरिक समृद्धि का स्रोत भारत की संस्कृति है। लॉकडाउन के अनुशासन का करीब – करीब सभी ने माना है। शनै-शनै हर वर्ग के लोगों ने शारीरिक दूरी व सामाजिक दूरी की महता को समझा और उसे स्वीकारा है।

वर्तमान में पुलिस वाले लोगों की दिल से सेवा कर रहे हैं। जरूरतमंदों के लिए भोजन, दवाई, दूध, पानी एवं अन्य

खाद्य सामग्री का वे खुद इंतजाम कर उनके घरों तक पहुंचा रहे हैं और लोगों से निवेदन कर रहे हैं कि वे लॉकडाउन के समय अपने घरों से नहीं निकलें। कोरोना संघर्ष के दौरान लोगों ने पुलिस को अपना मित्र, परिजन, परिवार, सहायक और सच्चे शुभचिंतक के रूप में स्वीकार किया है। वास्तव में आज की पुलिस सतत कर्तव्यनिष्ठ, अतिरिक्त सभ्य और आत्मीय हो गई है। इसका नया अवतार सुखद है। कर्तव्य पालन के प्रति अटूट निष्ठा की स्थिति फील्ड में काम कर रहे अधिकारीयों और स्टाफ सदस्यों की भी है। आज कोरोना काल में संघर्ष के सुनाम-गुमनाम योद्धा प्रशंसा, प्रणाम, स्वागत व हार्दिक अभिनंदन के पात्र हैं।

लॉकडाउन हर दिन अपनी आर्थिक कीमत वसूल रहा है। इसलिए पहले जान है तो जहान है पर ज़ोर दिया गया और फिर जान के साथ जहान भी है। लोगों के जीवन को बचाने के साथ-साथ उनके लिए जीविका के साधनों की भी चिंता जरूरी है। यह भी उम्मीद की जा रही है कि चंद दिनों के बाद सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा। परंतु ऐसा भी प्रतीत होता है कि देश-दुनिया को एक अर्से तक कोरोना के साये में ही जीना होगा। ऐसे में उचित यही होगा कि नई जीवन शैली और साथ ही नए कारोबारी तौर-तरीके अपनाने के लिए तैयार रहा जाए। आज नए व्यवसाय मॉडल की जरूरत को रेखांकित करने का समय आ गया है। वर्तमान परिपेक्ष्य में दुनिया को न केवल काम-काज के ने तौर-तरीके अपनाने होंगे, बल्कि दक्षता और उपलब्धता को भी नए सिरे से परिभाषित करना होगा।

फिर भी इस विपत्ति की घड़ी में हमारा देश आशान्वित है कि देश की आर्थिक गाड़ी पुनः अपनी पटरी पर दौड़ेगी। सिर्फ यही नहीं भारत से अन्य देश भी यह सबक लेंगे कि आर्थिक स्थिति में कैसे सुधार लाया जाए। हालांकि कोरोना वायरस से लड़ने के लिए भारत के पास पाँच उपलब्धियां हैं:-

1. फिलहाल भारत में जनसंख्या की आयु कम है। जिसकी वजह से होने वाली मृत्युदर हमारे देश में कम है।
2. अन्य देशों की तुलना में हमारे देश का औसत तापमान अधिक है जिससे कोरोना का फैलाव कम है।
3. डिजिटल इंडिया (डिजिटल भारत) अर्थात डिजिटलीकरण के माध्यम से भारत ने ई-सेवा क्षेत्र में अपनी मिसाल कायम किया है। आज इंटरनेट के माध्यम से सेवा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के निर्यात बढ़ रहे हैं।
4. शिक्षा जगत को भी पूर्णतः इंटरनेट के माध्यम से जोडकर ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है जिससे की शिक्षा जगत भी उन्नत हो जाएगा।
5. भारत की संस्कृति सेवा धर्म, सेवा भाव, परोपकार, दूसरों की भलाई पर भी टीका हुआ है, जिसकी वजह से भारत में भूखे मरने की नौबत नहीं आएगी। भारत मानवीय मूल्यों के प्रति काफी संवेदनशील है। और इस संकट को मिलजुल कर दूर करने हम सक्षम हैं।
6. भारत की बैंकिंग व्यवस्था काफी मजबूत है। इसका नेटवर्क सुदूर गांवों तक जुड़ा हुआ है। सरकारी क्षेत्र के बैंकों की पहुँच आम जनता तक है। इसके माध्यम से आम जनता को सुविधा प्रदान की जा सकती है और सरकार की सभी योजनाओं को कार्यान्वित किया जा सकता है।

कोरोना काल में चीन की भूमिका को लेकर पूरी दुनिया में चिंता है इसलिए चीन की मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र में संकट अवश्य आएगा लेकिन चीन ने अपने कारखानों को शीघ्र चालू कर लिया है। अब यह किसी से छिपा नहीं है कि चीन को कोरोना बायरस का संक्रमण दुनीया भर में फैलाने का जिम्मेदार माने जाने की कारण यूरोपीय देशों के साथ-साथ अमेरिका, जापान,ब्रिटेन आदि की बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ वहाँ से अपना बोरिया-बिस्तर समेटने की तैयारी कर रही है। इसे भारत के लिए एक स्वर्णिम अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए। परंतु आवश्यक यह है कि संबंधित मंत्रालयों की एक संयुक्त टीम गठित कर तत्परता का परिचय दिया जाए ताकि ये कंपनियाँ भारत में अपने व्यवसाय को यथाशीघ्र स्थापित कर सकें। बीते कुछ समय में देश में कारोबारी माहौल अनुकूल रहा है।

निःसन्देह इस संकट काल में चीन से बहुराष्ट्रीय कंपनियों का पलायन भारत के लिए एक अवसर है।

समय का चक्र परिवर्तनशील है। जो आज धूल-धूसरित है, वही कल पुष्प से सुवासित है। नोवेल कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी ने दुनिया से विकास को एक स्प्रिंग की तरह दबा रखा है। जैसे ही इसका प्रकोप शांत होगा और दुनिया में रोज़मर्रा के कामकाज पटरी पर आएंगे, दबी स्प्रिंग की स्थितिज ऊर्जा जेट की गतिज ऊर्जा में बदल जाएगी और हर कोई अपने कौशल और रणनीति के मुक़ाबले दुनिया के आर्थिक परिदृश्य में अपना मुकाम तय करने के लिए आगे बढ़ेगा। आर्थिक विशेषज्ञों और राजनीतिज्ञों और रणनीतिकारों के साथ हालात भी बता रहे हैं कि आने वाले दिनों में सेवा क्षेत्र के सिरमौर भारत और ज्यादा तरक्की करेगा। भारत हमेशा से ही औद्योगिक क्षेत्र में कुछ विशेष करते आया है।

विशाल रूप में, ऐसा देखा जा रहा है कि नोवेल कोरोना महामारी (कोविड-19) के जन्मदाता की पहचान के बाद दुनिया में चीन की छवि धूमिल हुई है। विश्व की अधिकांश कंपनियाँ वहाँ से पलायन करना चाह रही हैं। चीन में कार्यरत अमेरिका की ज्यादातर कंपनियाँ भारत जैसे शांतिप्रिय देश में अपना उद्योग स्थानांतरित होना चाहती हैं। इस अवसर का अगर आंशिक लाभ भी भारत को मिलता है तो ये हमारे देश के लिए गुणात्मक रूप से आगे ले जाने में काफी सहायक सिद्ध होगा। कोरोना की रह-रहकर चरणों में वापसी की बात कही जा रही है तो ऐसे में

मैन्यूफैक्चरिंग कार्यस्थलों पर सामाजिक दूरी की पालन करना अनिवार्य होगा। जिसकी वजह से औनी-पौनी क्षमता से ही श्रमिक काम करेंगे जिसका प्रतिकूल असर उत्पादन पर स्पष्ट दिखाई देगा।

सेवा क्षेत्र एक ऐसा कारोबार है कि जहाँ पूरी क्षमता के साथ कार्यस्थल से इतर सुरक्षित स्थानों से भी अंजाम दिया जा सकता है। यानि भारत का सेवा क्षेत्र पूरी क्षमता के साथ कार्य करने को तत्पर है लेकिन चीन का मैन्यूफैक्चरिंग ऐसा करने में असमर्थ है। 'मेक इन इंडिया' को मजबूत बनाने के तहत विदेशी कंपनियों को लुभाने वाले भारत के हालिया प्रयास और चीन के विदेशी कंपनियों के होते मोहभंग वाले दोहरे असर के साथ सेवा क्षेत्र के अलावा मैन्यूफैक्चरिंग में भी हम पड़ोसी देश को मात दे सकते हैं। ऐसे में कोरोना काल के बाद दुनिया के आर्थिक परिदृश्य में भारत मील का पत्थर साबित होगा।

कोरोना : आपदा में अवसर को तलाशने की जरूरत

निवेदिता
मुख्य प्रबंधक
यूको बैंक, पटना मुख्य शाखा

पूरी दुनिया के लिए संकट लेकर आया कोरोना वायरस डरावना तो है, लेकिन इस महामारी के जरिए शीर्ष से नीचले स्तर तक के स्वास्थ्य प्रणाली का खोखलापन को उजागर करते हुए देश के लिए वरदान भी साबित कर दिया है। इस वायरस की वजह से हमारे देश की स्वास्थ्य प्रणाली में विशेष रूप से सुधार भी होगा। जरूरी दवाओं के लिए चीन पर निर्भरता से लेकर डॉक्टरों की कमी और नीचले स्तर पर स्वास्थ्य की आधारभूत संरचना का अभाव सब कुछ विकृत रूप में सामने आया है। कोरोना कहर की वजह से सारे संसाधन, मेधा और शक्ति इनसे निपटने में झोंक दी गई है। उम्मीद की जा रही है कि कोरोना से निपटने के लिए समुद्र मंथन से देश में स्वास्थ्य सेवाओं के लिए जीवनदायी अमृत निकलेगा।

भारत में जब कोरोना वायरस ने पाँव पसारना शुरू किया तो उस समय भारत के पास पीपीई किट, एन-95 मास्क से लेकर मेडिकल उपकरण तक नहीं थे। मास्क तक के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता था। वह भी

तब जब हम भारत को मेडिकल ट्यूरिज़्म के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहे थे। सब कुछ दूसरे देशों के सहारे चलता रहा। परंतु कोरोना संकट के बीच सरकार ने ना सिर्फ बल्क ड्रग के निर्माण के नियमों में ढील देने की नई नीति का एलान किया, बल्कि इसपर काम भी शुरू कर दिया। इसी तरह पीपीई किट, एन-95 मास्क से लेकर सभी तरह के मेडिकल उपकरणों के निर्माण के लिए कोशिशें शुरू हो गई हैं। इससे भविष्य में भारत इन सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर होगा।

कोरोना से निपटने के लिए आज भारत में विभिन्न प्रकार की एहतियात बरते जा रहे हैं। वर्तमान में बहुत सार लोगों ने सैनिटाइजर, मास्क, ग्लब्स, पीपीई कीट जैसे चीजों का उत्पादन करना शुरू कर दिया है। समय के साथ दूसरे व्यवसाय की तरफ भी रूख किया जा सकता है। फिलहाल ऐसी स्थिति में व्यापारियों को भी नया रास्ता अपनाना चाहिए। समय के साथ व्यापार में भी बदलाव होना चाहिए। जैसे- फल बेचने वाले मौसम के साथ सब्जी भी बेचने लगते हैं। आज शिक्षा जगत में भी वर्चुअल क्लासेस (आभासी कक्षाएँ) चलने लगी है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लोगों को इस तकनीक व विचार को अपनाना जरूरी हो गया है। समय के बदलाव के साथ ही लोग अपनी नई भूमिका का निर्वाह करने लगते हैं। चाहे फिल्मी जगत हो या आर्थिक जगत हर किसी को समय के साथ रूख करना होता है। ग्राहकों, दर्शकों या उपभोक्ताओं की सुविधा को ध्यान में रखकर ही आगे किसी भी व्यवसाय के लिए आगे की रणनीति बनाई जाती है।

कभी तूफान या आंधी आने की वजह से जब हमारे घर में दो-तीन दिनों तक बिजली नहीं आती है तो हम दूसरे विकल्प के रूप में मोमबत्ती, लालटेन, दीया, इमरजेंसी लाईट आदि का उपयोग करके काम चलाते हैं। हर अवसर में विकल्प भी मौजूद रहता है। अगर कोई आपदा आती है तो उसमें हमें अवसर की तलाश भी करनी चाहिए। हर विपत्ति में कोई न कोई अवसर जरूर छिपा रहता है, हमें सिर्फ उसे तलाशने की जरूरत होती है। बैंकिंग क्षेत्र की अगर हम बात करें तो आने वाले समय में बैंकिंग की दशा और दिशा में भी बदलाव होगा। आपदा और विपत्ति हमें नई राह दिखाती है। कुछ अलग और नया करने के लिए हमें विवश होना पड़ता है। बैंकिंग लेनदेन में भी अब ऑनलाइन बैंकिंग को ज्यादा महत्व देना होगा। शाखा में ग्राहकों की भीड़ न लगे इसके लिए उन्हें बैंकिंग ज्ञान से शिक्षित करना होगा ताकि वे घर बैठे ही बैंकिंग सेवा का लाभ उठा सकें।

चिकित्सा केंद्र परिवर्तित हुए वेलनेस सेंटर में

बड़े शहरों तक सीमित महंगे और अच्छे अस्पतालों के कारण देश की बड़ी आबादी स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित थी। आयुष्मान भारत के माध्यम से 40 प्रतिशत आबादी ही अत्याधुनिक चिकित्सा मुहैया कराने की कोशिश जरूर की गई, लेकिन यह केवल गंभीर बीमारियों के लिए है। रोज़मर्रा की बीमारियों के लिए आम लोगों के लिए इलाज का कोई विकल्प नहीं था। देश के मृतप्राय जैसे प्राथमिक चिकित्सा केन्द्रों को वेलनेस सेंटर के रूप में विकसित करने की कोशिश शुरू हुई है और लगभग 30 हजार सेंटरों को वेलनेस में बदल दिया गया।

कोरोना काल में टेली-मेडिसिन और दवाइयों की होम डेलीवरी का विकल्प भी सामने आया है। भविष्य में टेली-मेडिसिन ग्रामीण और स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित इलाकों में लोगों के लिए वरदान साबित हो सकता है। कोरोना के दौरान यह बात भी सामने आई है कि देश में डॉक्टरों की संख्या में भारी कमी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मापदंड के मुताबिक प्रति के हज़ार की आबादी पीआर एक डॉक्टर होने चाहिए। लेकिन भारत में 1456 लोगों पर एक डॉक्टर है।

स्वास्थ्य सेवाओं में मास्टर प्लान का अवसर

कहा जाता है कि किसी भी देश या राज्य का सामाजिक-आर्थिक विकास वहाँ के सेहतमंद नागरिकों पर निर्भर करता है। परंतु कोरोना जैसी महामारी ने विश्व के अनेक देशों के साथ ही भारत और इसके राज्यों की तस्वीर काफी

हद तक बदल कर रख दी है। सरकार ने इस महामारी को एक चुनौती के रूप में लिया और अब इस बीमारी को ध्यान में रखकर भविष्य की योजना पर काम शुरू हो गया है। कोरोना काल में प्राइवेट डॉक्टरों ने जिस प्रकार सरकार के साथ असहयोगात्मक रवैया अपनाया है उससे सबक लेते हुए सरकार सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों की ज्यादा संख्या में भर्ती पर विशेष ध्यान देगी। दिल्ली सरकार ने जिस तरह से सरकारी अस्पतालों में बेहतर सुविधा मुहैया कराई है उसी तर्ज पूरे भारत में चिकित्सा सेवाएँ बहाल की जाएगी ताकि प्राइवेट अस्पतालों में मरीजों का आर्थिक रूप से शोषण नहीं हो।

कोरोना से मेडिकल पॉलिसी बाजार को सुअवसर

कोरोना काल के दौरान ऐसा पाया गया कि अधिकांश टेलिविजन चैनलों पर मेडिक्लेम पॉलिसी का ज़्यादातर प्रचार दिखाया गया। इससे यह स्पष्ट है कि कोरोना महामारी ने स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रति लोगों में चिंताएँ बढ़ा दी है। सेहत पर निजी व सार्वजनिक खर्च में वृद्धि की नींव कोरोना ने तैयार कर दी है। मंहगे इलाज के लिए अधिकांश लोगों के पास पैसे नहीं हैं। इसके लिए लोगों का रूझान मेडिक्लेम और बीमा कंपनियों के प्रति लगातार बढ़ रहा है। वर्तमान में शहरी क्षेत्रों में मेडिकल पॉलिसी के प्रति जागरूकता अधिक है। स्वास्थ्य क्षेत्र में सरकारी क्षेत्र की चार कंपनियाँ मेडिक्लेम सुविधा उपलब्ध करा रही है। जबकि निजी क्षेत्र में एक दर्जन से अधिक कंपनियाँ लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा की पॉलिसी बेच रही है। अस्पताल में भर्ती से जुड़ी पॉलिसी के कवरेज में सभी बीमारियां शामिल हैं। पॉलिसी अवधि में ग्राहकों को कोरोना के खतरे में अस्पताल में होने वाले खर्च को कवर किया जा रहा है। उम्मीद है कि कोरोना काल के बाद भी इस क्षेत्र में काभी रूझान आएगा।

प्रवासी मजदूरों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में स्वर्णिम अवसर

आठवें और नौवे दशक में जातीय संघर्ष एवं नक्सली आंदोलनों से कुछ राज्यों को बहुत नुकसान हुआ है। गिरमिटिया मजदूरों के जबरन विस्थापन के बाद यह पहला मौका था, जब लाखों लोग घर-परिवार से दूर हो गए। यह वह दौर था जब उस राज्य की खेती श्रमशक्ति के अभाव में चौपट हो गई और दूसरे प्रदेश फलते-फूलते गए। परंतु कोरोना काल ने भविष्य के लिए विकास काल के मार्ग को परिभाषित किया है। प्रवासी मजदूरों के लौटने के परिणामस्वरूप आने वाले समय में कृषि जैसे परंपरागत पेशे के साथ-साथ गांवों में पशुपालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, मुर्गी पालन, फूलों की खेती जैसे कामकाज के प्रति लोगों का व्यावसायिक रूझान बढ़ेगा। अनाज व खाद्य सामग्री की पैकेजिंग और खाद्य प्रोसेसिंग का काम भी गांवों में बढ़ेगा। इसकी वजह से गांवों से पलायन और शहरीकरण की रफ्तार थोड़ी धीमी हो जाएगी। लेकिन अर्थव्यवस्था में गांवों की हिस्सेदारी बढ़ेगी। इससे गांवों में ही लोगों को रोजगार मिलेंगे।

कोरोना काल ने गांवों की प्रचलित एक लोकोक्ति को करारा झटका दे दिया है, जिसमें कहा हटा है कि लोटा और बेटा बाहर ही चमकता है। कोरोना ने जो घाव, बेरोजगारी और यातनाएँ दी है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि अब शायद ही माता-पिता अपने बच्चों को बाहर भेजेंगे। गांवों में श्रम है। उर्वर भूमि है। जल है। संसाधन है। सुशासन और संकल्प शक्ति भी है।

<u>प्रवासी मजदूरों के लौटने से आएगा अवसर</u>:- फिल्म 'नाम' के गाने की कुछ पंक्तियाँ आज चरितार्थ हो रही हैं जिसमें गायक पंकज उदास ने गाया है "ओ परदेश को जानेवाले,

वतन को लौट के न आनेवाले, आ जा, अब लौट के आ जा, उमर बहुत है छोटी, अपने घर भी है रोटी....."

प्रवासी मज़दूरों के लौट के आने से गांवों में फिर से खुशहाली लौट आएगी। कृषि प्रधान देश और भी हरा-भरा हो जाएगा। लोग अपने गाँव में ही कुटीर उद्योग लगा सकते हैं। अपने व्यवसाय को उन्नत करते हुए देश के लिए आर्थिक मददगार हो सकते हैं। कल को यह भी संभव हो सकता है कि शहर के लोग गांवों की ओर लौटते नजर आएँ। क्योंकि जब सारी भौतिक सुख-सुविधाएं गांवों में ही प्राप्त होने लगे, वहाँ की स्वच्छ प्राकृतिक वातावरण, खान-पान की शुद्धता, अच्छे स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय आदि की सेवाएँ गांवों में प्रदान की जाने लगे तो ग्रामीणों का शायद पलायन नहीं होगा। गांवों में न केवल बिजली, सड़क, टेलीफोन, इंटरनेट, रसोई गैस, जैसी मूलभूत सुविधाएं पहुँच चुकी हैं बल्कि उनकी गुणवता में भी सुधार हुआ है। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में उदारीकरण और भूमंडलीकरण लागू करना आसान हो गया है। करोड़ों प्रवासी कामगारों के साथ देश के लाखों गांवों में एक उद्यम रूपी कार्य संस्कृति भी आई है जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकती है, बशर्ते, उसे अनुकूल परिस्थिति मिले और यह परिस्थिति तभी हो सकती है जब ग्रामीणों व किसानों के अनुरूप सुविधाएं प्रदान की जाए ताकि वे विश्व बाजार में अपनी उपस्थिति दर्ज कर सकें।

कोरोना काल में प्रवासी मजदूरों का पलायन सबसे ज्यादा हुआ है। अकाल, सूखा, बाढ़ और क्षेत्रीय संघर्षों को छोड़ दिया जाए तो देश में इतने बड़े पैमाने पर कामगारों का पलायन कभी नहीं हुआ। कोरोना संकट में ज्यादातर मजदूर पैदल, साइकिल, ट्रक, बाईक या अन्य यातायात के माध्यमों से और ट्रेनों से अपने गाँवों की ओर लौट रहे हैं, वास्तव में वे दाल- रोटी कमाने के लिए मजबूरी में शहर की ओर आएँ थे। हरित क्रान्ति का अग्रणी प्रदेश पंजाब से भी प्रत्येक वर्ष हजारों किसान खेती छोड़ रहे हैं। स्पष्ट है कि गांवों से शहरों की ओर पलायन करना मजबूरी में हुआ है। मजदूरों के पलायन से विनिर्माण, खनन, परिवहन, व्यापार, उद्योग जैसी गतिविधियों का प्रभावित होना लाजिमी है। कोरोना संकट के बाद भले ही ये कामगार फिर से दाल-रोटी के लिए शहरों की ओर रुख करें लेकिन उनके गाँव ने उन्हें यह याद दिला दिया है कि मुसीबत के समय गाँव का दामन पकड़ना ही पड़ेगा। अब गांवों को मनीऑर्डर अर्थव्यवस्था से आगे बढ़कर उत्पादक अर्थव्यवस्था में बदलने की जरूरत है ताकि शहरी अर्थव्यवस्था के बराबर ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था विकसित हो सके।

प्रवासी मजदूरों के लौटने से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि कोविड-19 महामारी के खिलाफ आर्थिक जंग में भी अन्नदाता की भूमिका निभा सकते हैं। कोरोना ने यह भी सीखा दिया है कि अब उत्पादन से लेकर उसकी बिक्री तक के लिए आधुनिक तरीके अपनाने होंगे। अब शहरों की ओर भाग रहे युवा वापस अपने गाँव में ही रोजगार या स्वरोजगार की तलाश करेंगे। जो युवा व मजदूर बड़े शहरों से कुछ विशेष तकनीक या नई चीज सीखकर आएँ अब वे अपने गांवों में रहकर ही अपनी पहचान बना सकते हैं और ग्रामीण क्षेत्र में बेहतर विकास भी कर सकते हैं। इससे गांवों की तस्वीर और अर्थव्यवस्था दोनों बदल सकती है। आने वाले दिनों में कोरोना महामारी की वजह से वैश्विक बाजार में खाद्यान्न की किल्लत/कमी लंबे समय तक रह सकती है। ऐसी स्थिति में शहरों से लौटे प्रवासी मजदूरों की भूमिका अहम हो सकती है। देश की खाद्य सुरक्षा को महफूज रखने के साथ खाद्यान्न की निर्यात माँग को पूरा करने का एक अच्छा अवसर भी है। ग्रामीण बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने की दिशा में खेती से जुड़ जाने को तैयार लोगों को अब उत्पादन करने की बजाय फूड प्रोसेसिंग क्षेत्र में उतरना होगा। शहरों से बेहतर लिंक होने की वजह से कृषि उत्पादों की मार्केटिंग क्षेत्र को विशेष बल मिलेगा। निर्यात माँग को पूरा करने से खेती की दशा व दिशा दोनों बादल जाएगी। खेती के अतिरिक्त उद्यमों से पशुधन, डेयरी, पॉल्ट्री, बागवानी के क्षेत्रों में भी विकास होगा। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और किसानों और खेतिहरों का उद्धार भी संभव होगा।

अगर औद्योगिक उत्पादों की तरह ही कृषि उत्पादन के भंडारण, प्रोसेसिंग, मार्केटिंग के लिए नेटवर्क तैयार किया जाए तो भारतीय कृषि उत्पाद ग्लोबल बाजार में अपनी

बेहतर छवि स्थापित कर सकता है। खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों की जगह जैविक कृषि उत्पादों का एक बड़ा बाजार निर्मित हो सकता है। और वर्तमान का ग्राहक गुणवता पर ज्यादा ध्यान देता है न कि कीमत पर। कोरोना संकट ने देश को नई सोच के साथ सुनहरा अवसर भी प्रदान किया है।

यह कल्पना करना सुखद है कि इस संकट के समय विश्व भारत की ओर उम्मीदों की ओर देख रहा है। कोरोना वायरस से उपजी कोविड-19 बीमारी के उपचार के लिए सहायक मानी जाने वाली मलेरिया की दावा को जब भारत ने तमाम देशों को उपलब्ध कराया तो उससे भारत की अंतर्राष्ट्रीय छवि और अधिक निखरी है। आज विश्व समुदाय भारत की सराहना करने के साथ इस पर निगाह लगाए है कि वह कोरोना संकट से कैसा निजात प सकता है। कोरोना के कहर को थामकर भारत एक मिसाल कायम करने के साथ उन उम्मीदों को पूरा कर सकता है जो विश्व समुदाय उससे आस लगाए हुए है और यह तभी सफल हो सकता है जब संक्रमण को रोकने के लिए युद्धस्तर पर कार्य किया जाए।

फिलहाल प्रवासी मजदूरों के लिए राज्य सरकारें विभिन्न योजनाओं के तहत उन्हें रोजगार देने का भरसक प्रयास कर रही हैं। इससे यहाँ के मजदूरों को अपने ही घर में रोजी-रोटी का जुगाड़ हो जाएगा और जीवन-यापन के लिए उन्हें दूसरे राज्यों की ओर पलायन नहीं करना होगा क्योंकि जीविकोपार्जन के लिए उनका अपना घर ही स्वर्ग जैसा है।

प्रस्तुति: डॉ सुनील कुमार

कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा और उसका भविष्य

कहा जाता है कि लोग विकट परिस्थितियों में टूट जाते हैं तो कुछ लोग इन्हीं परिस्थितियों में रिकॉर्ड भी तोड़ देते हैं। इतिहास साक्षी है कि कई बार विकट परिस्थितियों से दुनिया बदली है। जापान के नागासाकी और हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया गया। जापान तबाह हो गया था परंतु विकट परिस्थितियों का डटकर मुक़ाबला करते हुए आज जापान विकसित देशों की श्रेणी में है। मनुष्य के जीवन में विपत्ति के पल आते हैं और जो इसका डटकर मुक़ाबला करते हैं वे सफलता की मंजिल प्राप्त करते हैं। आपदा के साथ-साथ अवसर भी आते हैं। आपदा के समय नई सोच, नया तरीका, जोश, उत्साह और नयी उमंगों के साथ नई दिशा का भी निर्माण होता है। नए रास्ते और रिश्ते भी बनते हैं। और समय के साथ मनुष्य भी उसी दिशा और दशा में ढल जाता है।

डॉ सुनील कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, पटना

जीवन के अनेक क्षेत्रों के साथ-साथ मनुष्य ने तकनीक का भी खूब विकास किया है। तकनीकी क्षेत्र में विशेष विकास की बदौलत मनुष्य के अनेक आयामों में कुछ विशिष्ठ परिवर्तन हुआ है। ये बदलाव न केवल मात्रात्मक विस्तार

के रूप में हुए बल्कि गुणात्मक भी हुए हैं। और इसका लाभ अधिकांश लोगों को मिला है। भारत में शिक्षा का तंत्र अत्यंत व्यापक है। एक सर्वेक्षण में ऐसा पाया गया है कि ई-लर्निंग पाठ्यक्रम में भारत दुनिया में अमेरिका के बाद दूसरा स्थान रखता है। ई-लर्निंग का मतलब नेटवर्किंग के माध्यम से दूरस्थ बैठे लोगों को शिक्षण के निर्देश सुलभ कराना है। डिजिटल लाइब्रेरी के तहत अब हम उन पुस्तकों को घर बैठे- बैठे आसानी से पढ़ सकते हैं जो पहले असंभव लगता था।

शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक के उपयोग से न केवल इसे आम जनता तक पहुंचाने में सहूलियत हुई है बल्कि शिक्षा के जो व्यापक उद्देश्य हैं, जैसे- ज्ञान का सृजन, ज्ञान प्रसार और ज्ञान का संरक्षण, इन लक्ष्यों को हासिल किया जाना जरूरी होता है। इसके अलावा कृषि, उद्योग, व्यापार व सेवा के क्षेत्र में जिस तरह लोगों को आवश्यकता है, हम उन्हें उपलब्ध कराने में सफल हों। तकनीक ने शिक्षा को गुणवत्तापरक बनाने में अहम योगदान दिया है। यही कारण है कि आज की नवयुवा पीढ़ी और आधुनिक समाज का रूझान ई-लर्निंग की ओर बढ़ा है। ई-लर्निंग प्रणाली इसलिए भी लोकप्रिय हो रही है क्योंकि यह सस्ती है और लचीलापन है। व्यक्ति अपनी जगह से अपनी रूचि के अनुरूप पाठ्यक्रम में नामांकन करा सकता है। ई- लर्निंग के विभिन्न स्त्रोत और प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं, जिनमें ज्ञानवाणी, स्वयं, स्वयंप्रभा, यू-ट्यूब, नेशनल डिपॉज़िटरी ऑफ ऑफ ओपन एज्यूकेशन, जूम, व्हाट्सएप्प, माइक्रोसॉफ़्ट टीम, स्काईप आदि जिसमें लोगों ने अनेक प्रकार के निजी और स्वतंत्र एप्प विकसित किया है। लेकिन हमें दूसरों के एप्प की नकल करने की जरूरत नहीं है बल्कि हमें अपने देश की प्रणाली विकसित करनी की चुनौती हमारे सक्षम खड़ी है।

ई-लर्निंग के आकर्षण की एक बड़ी वजह यह है कि इसे पर्याप्त स्थान मिला है। इसलिए ई-लर्निंग के जो प्रेजेंटेशन हैं, उनमें विद्यार्थियों की रूचि पारंपरिक पढ़ाई की तुलना में बढ़ रही है। आमने-सामने की शिक्षा की विशेषता यह है कि इसमें न केवल हम शिक्षक से संवाद करते हैं, बल्कि सहपाठियों व मित्रों के साथ संवाद से भी हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है, उसे ई-लर्निंग के जरिए हम कैसे विकसित कर सकते हैं? हमें इन दोनों के "हाइब्रिड मोड" को प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

कोविड-19 की वैश्विक त्रासदी के दौर में आमने-सामने की पारंपरिक शिक्षा के सामने कठिनाई खड़ी हो गई है। विद्यार्थियों को शैक्षणिक हानि हो रही है। इस हानि को कम करने के लिए ई-लर्निंग के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है। हम ई-सामग्रियों को अपलोड करके इस नुकसान की भरपाई कर सकते हैं। सिर्फ यही नहीं, बल्कि भविष्य में हाइब्रिड मोड के माध्यम से व्यापक मानव समाज में शिक्षा के प्रसार का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। पर इस संभावना की बड़ी चुनौती है- घर बैठे विद्यार्थियों की मनः स्थिति व तनाव को समझकर काउंसिलिंग सेंटर के जरिए ई-सामग्री तैयार करना और उसे अपलोड करना।

इसमें संदेश नहीं कि आज इंटरनेट की सुविधा हमारे पास उपलब्ध है। इसके कारण विद्यार्थियों में ई-लर्निंग के प्रति रूचि बढ़ी है। भविष्य में एजुकेशनल जोन भी स्थापित हो सकता है। इसके माध्यम से हमें न सिर्फ अपने देश के विशेषज्ञों की विशेषता का लाभ मिलेगा अपितु दुनिया भर के विशेषज्ञों से हम संवाद भी स्थापित कर सकते हैं।
आशावादी आपदा में भी अवसर ढूँढता है। वह विकट परिस्थिति में ही कुछ विशेष चीजों को तलाशता है। कहा जाता है कि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। जैसे- रात के बाद दिन का होना, अंधेरे के बाद उजाले का आना, धूप के बाद छांव, दुःख के बाद सुख, असफलता बाद सफलता जरूर आता है वैसे ही विपत्ति के बाद विस्तार होना लाजिमी है। इन सारी परिस्थितियों को क्षणभंगुर मान कर हमें सदैव आशान्वित रहना चाहिए। हमें अपने जिंदगी की रफ्तार को गतिमान रखना चाहिए ताकि वर्तमान की मुसीबतों का कोई असर न पड़े और इस विपत्ति से सबक लेते हुए भविष्य निर्माण के लिए नई दिशा में सोच को विकसित करना चाहिए। यह सिर्फ अपने लिए

समय की मांग है ऑनलाइन शिक्षा

नहीं अपितु अपने समाज, राष्ट्र और विश्व कल्याण के लिए हो। कहा जाता है कि समय से साथ सुलह कर लेने वाला व्यक्ति ही समझदार होता है। समय जिस ओर ले चले हमें उसी ओर चलना चाहिए क्योंकि समय बहुत बलवान होता है। समय के आगे हर किसी को झुकना होता है और झुक कर ही भविष्य का नया रास्ता भी निकाला जा सकता है।

कोरोना काल ने हमें आज यह सोचने और करने को मजबूर कर दिया है कि शिक्षा नीति में विशेष बदलाव किया जाए। अब बच्चों को स्कूल में पढ़ाने की बजाय घर पर ही ऑनलाइन शिक्षा प्रदान की जाए। अब घर ही गुरुकुल हो जाएगा और इसमें माता-पिता की भूमिका अहम हो जाएगी यानी माता-पिता को अपने बच्चों के प्रति पहले से ज्यादा जिम्मेदार होना होगा। कोरोना की इस विपत्ति ने भारतीय शिक्षा को नई दिशा की ओर ले जाने के लिए बाध्य कर दिया है। तात्कालिक तौर पर स्कूलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के परेशानी खड़ी कर दी है, परंतु धीरे-धीरे चालों स्कूल से- पढ़ो ऑनलाइन से की ओर बढ़ रहा है। आज इसे शिक्षा जगत सुखद मान रहा है, क्योंकि जिसे लेकर भविष्य के सपने बुने जा रहे थे, उसने वर्तमान में दस्तक दे दी है।

ऑनलाइन शिक्षा वर्चुअल क्लास के रूप में

करोना संकट में शिक्षण संस्थाओं में सन्नाटा पसरा हुआ है। सुविधा सम्पन्न संस्थाएं अपने विद्यार्थियों को ऑनलाइन पढ़ाई करा रही हैं। वेबसाइट, व्हाट्सएप्प और एप्प के माध्यम से होमवर्क दे रहे हैं। सिलेबस और पुस्तकें भी ट्रैक पर है। पढ़ाई के तरीके बदलने से विद्यार्थी चकित हैं और तौर-तरीके को रूटीन का हिस्सा मानकर आनंदित हैं। वे बस्ते के बोझ खत्म होने से खुश हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य को देखते हुए ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि बहुत जल्द वर्चुअल कक्षा का दौर आ जाएगा। जो लोग सूचना क्रांति और तकनीक की महता को समझते हैं वे मान रहे हैं कि यही मौका है पढ़ाई-लिखाए के पुराने ढर्रे से हटकर नई इबारत लिखने की। कोरोना महामारी जैसी चुनौती ने बिहार में शिक्षा की मौजूदा व्यवस्था में बड़े बदलाव का रास्ता दिखाया है। अब बदलाब का समय आ गया है। भविष्य में पारंपरिक कक्षा का स्थान आभासी कक्षा (वर्चुअल क्लास) ले लेगा। प्राइमरी और सेकेंडरी लेवल पर वर्चुअल क्लासरूम को लेकर बदलाव का तानाबाना बुना जाने लगा है। स्कूल और कॉलेजों में पढ़ने वाले करोड़ों विद्यार्थी हैं, जिसमें से आठ से नौ प्रतिशत विद्यार्थी ही ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। भविष्य में ऑनलाइन शिक्षा पर विशेष बल देना होगा ताकि विद्यार्थियों पर पढ़ाई और बस्ते का बोझ कम हो सके। कोरोना काल में इस बात की मंत्रणा होने लगी है कि वर्ष 2024 तक स्कूलों और महाविद्यालयों में आभासी कक्षा (वर्चुअल क्लास) को ज्यादा महत्व दिया जाएगा। ई-पाठशाला, स्मार्ट क्लासरूम, औडियो-विडियो और डिजिटल आधारित खुली शिक्षा के सेंटर के रूप में विकसित करने की बड़ी भविष्य योजना होगी।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत जैसे विशाल देश में ऑनलाइन शिक्षा की जरूरत है, क्योंकि देश में अब भी एक बड़ी आबादी ऐसी है जिसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं होने की वजह से वे गुणवतापूर्ण शिक्षा की पहुँच से कोसों दूर है। ऐसे में, शिक्षा से वंचित आबादी भी ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से अब गुणवतापूर्ण शिक्षा ग्रहण कर सकेगी। ऑनलाइन शिक्षा का उद्देश्य भी यही है कि देश के सभी नागरिकों को शिक्षित किया जाए और सामान्य रूप से उन्हें एक उच्च स्तरीय शिक्षा आसानी से प्रदान की जाए।

लेकिन भारत जैसे देश में जहाँ गुरु-शिष्य की परंपरा बहुत पुरानी रहे है, जहाँ आमने-सामने गुरु-शिष्य की पढ़ाई का प्रचलन है क्या वहाँ ऑनलाइन शिक्षा विकल्प के रूप में कारगर हो सकता है? क्या ऑनलाइन शिक्षा से बच्चों की जिज्ञासा शांत हो सकती है? भारत जैसे देश में जहाँ बिजली से लेकर इंटरनेट तक की उपलब्धता और स्पीड हमेशा सवालों की घेरे में है वहाँ क्या ऑनलाइन शिक्षा का विकल्प

उचित होगा। यह भी तय है कि औपचारिक स्कूली शिक्षा चलती रहेगी लेकिन ऑनलाइन शिक्षा की जो शुरुआत हो रही है अब उसे थामना मुश्किल होगा। वर्तमान में स्कूली शिक्षा से जुड़े करीब 25 करोड़ और उच्च शिक्षा से जुड़े करीब आठ करोड़ विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा से जोड़ पाना बहुत बड़ी चुनौती साबित होगी। परंतु ऐसा भी देखा गया है जब भी हमारे समाज, परिवेश या देश में कोई नई चीज आती है तो शुरुआती दौर में हम उसे नकारते हैं फिर धीरे-धीरे हम उसके आदि हो जाते है और वही हमें सुलभ और सुगम लगने लगती है।

ऑनलाइन शिक्षा को चालू रखने में कोई दिक्कत नहीं है। आने वाले दिनों में स्कूलों को अपने पठन- पाठन के स्वरूप को बदलना होगा। वैसे भी देश में ऑनलाइन शिक्षा के क्षेत्र में कई आई टी और दूसरी प्रॉफेशनल्स कंपनियाँ काम कर रही है। इन स्कूलों को अब इनके साथ मिलकर या उसी तरह के व्यावसायिक पैटर्न पर बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाना होगा। इस तरह से स्कूलों में अब दो तरह की पढ़ाई चालू हो जाएगा- एक स्कूल आकर और दूसरी ऑनलाइन । परंतु इन दोनों के बीच बड़ी चुनौती देखने को मिल रही है वह परीक्षाओं और प्रैक्टिकल को लेकर है। फिर भी भविष्य में इसका समाधान ढूंढ लिया जाएगा।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय से जुड़ी संस्था राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान का यह मानना है कि ऑनलाइन शिक्षा को चालू रखने में कोई दिक्कत नहीं हैं। उनके पास इससे जुड़ी पर्याप्त विषय सामग्री है और हजारों सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों की टीम मौजूद है। इससे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों का भी भविष्य उज्ज्वल होगा और वे ही देश के सबसे योग्य शिक्षकों से जुड़कर पढ़ सकेंगे। अब समय आ गया है कि हम अपने जीने की पद्धति को बदलें क्योंकि आने वाले दिनों में ऑनलाइन शिक्षा पर लोग ज़ोर देंगे। सभी स्कूलों में विधिवत ऑनलाइन शिक्षा जारी होने से विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम (सिलेबस) समयाकूल होगा जिससे उन्हें लाभ मिलेगा। मेरा दूरदर्शन, मेरा विद्यालय से लाखों विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण कर करे हैं। इसमें सीबीएसई और आईसीएसई स्कूलों के विद्यार्थी शामिल हैं। शिक्षकों द्वारा भेजे गए विडियो और प्रेजेंटेशन उनके लिए लाभप्रद सिद्ध हो रहा है।

कोरोना जनित आपदा ने आज पूरी दुनिया को तबाह कर दिया है। कोरोना काल ने समाज, सम्मिलन और संवाद पर ब्रेक लगा दिया है। 21वीं सदी की सर्वाधिक बड़ी घटना भूमंडलीकरण, सम्मिलन, संवाद एवं गति को तीव्र करने की प्रक्रिया रही है परंतु कोरोना वायरस ने इस गति की प्रवृति को उलटा कर हमें रूकाने को बाध्य कर दिया है। आज एक ऐसे रेस चल पड़ी है कि रूकनेवाला ही जीतेगा। मानव जनित कोरोना वायरस ने आज के अर्थशास्त्र को बहुत ज्यादा प्रदभावित किया है। जिसकी वजह से उद्योग, बाजार, व्यवसाय और शिक्षा पर गहरा आघात किया है। फिर भी इन विकट परिस्थितियों में ऑनलाइन शिक्षा का सहारा लेकर शिक्षा को आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है।

ऑनलाइन शिक्षा: सस्ता, सुगम व सुलभ

कोरोना संकट के चलते दुनिया के बड़े विश्वविद्यालय अब ऑनलाइन शिक्षण को ऑन कैंपस, क्लासरूम टीचिंग के विकल्प के रूप में विकसित करने में लगे हुए हैं। ऑनलाइन शिक्षण, ओपन शिक्षा के माध्यम से ये विश्वविद्यालय सस्ती और ज्यादा छात्रों को जोड़ने की रणनीति पर कार्य कर रहे हैं। ऑन कैंपस फीस की तुलना में ऑनलाइन शिक्षण की फीस काफी कम होगी। ये विश्वविद्यालय हॉस्टल की फीस भी वंचित रहेंगे और जब शिक्षण की सारी सुविधाएं ऑनलाइन हो जाएगी तो विदेश जाकर शिक्षा ग्रहण करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। कोरोना कहर के चलते अब ज्यादा दूर जाकर शिक्षा ग्रहण करने से अधिकांश छात्र घबराएँगे। मौजूदा हालात में उन्हें ऐसे शिक्षा केंद्र एवं सामाज चाहिए जहाँ उन्हें किसी भी किसी तरह की उपेक्षा का सामना नहीं करना पड़े और वे सुरक्षित महसूस कर सकें। यह बहुत ही सुखद है कि हमारी सरकार ऑनलाइन शिक्षण एवं संवाद विकसित करने पर लगातार ज़ोर दे रही है।

कोरोना वायरस ने मनुष्य जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। चाहे वह शिक्षा हो, व्यवसाय हो, आर्थिक जगत हो या फिर फिल्म जगत हो। सभी लॉकडाउन से जूझ

रहे हैं। अभी यह कोई नहीं कह सकता है कि स्थितियाँ कब सामान्य होंगी। सबसे ज्यादा तो शिक्षा की चिंता है क्योंकि बच्चे ही देश के भविष्य होते हैं और अगर भविष्य ही सही तरीके से शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाएगा तो वह समाज और राष्ट्र को क्या देगा।

केंद्र सरकार ने "भारत पढ़े ऑनलाइन योजना" पर कार्य शुरू कर दिया है। इसे और बेहतर बनाने के लिए सरकार ने जनता के भी सुझाव मांगे हैं। इसके तहत स्कूल शिक्षा से लेकर कॉलेज स्तर के इंजीनियरिंग उयर व्यावसायिक सहित सभी पाठ्यक्रम यथासंभव ऑनलाइन हो रहे हैं। यहाँ तक कि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराने वाले कोंचिंग सेंटर भी ऑनलाइन पढ़ाने की योजना बना रहे हैं। आज भारत में जहां तकनीक ने अपना एक विशेष स्थान बना रखा है उसके लिए ऑनलाइन सेवाएँ शुरू करना आसान है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

ऑनलाइन शिक्षा के विभिन्न पहलू

सरकार ने ई-लर्निंग की मुहिम को नई ऊंचाई देने के लिए "विद्यादान स्कीम' का नया चरण लॉंच शुरू किया है। कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विद्यार्थियों को घर बैठे ही ऑनलाइन शिक्षा देना शुरू कर दिया है और इसे भविष्य की नई ऊंचाई पर ले जाने की तैयारी में है। विद्यादान स्कीम के तहत अब कोई भी बच्चों के लिए उपयोगी अध्ययन सामग्री तैयार कर भेज सकता है। इस योजना के तहत सबसे ज्यादा ध्यान स्टडी, विडियो, एनिमेशन, लर्निंग प्लान, मूल्यांकन और प्रश्न बैंक आदि शामिल हैं। इसमें सभी सामग्री की गुणवता को पहले परखा जाएगा फिर उसे अलग-अलग लर्निंग माध्यमों से छात्रों के लिए उपलब्ध कराया जाएगा। वर्तमान में ई-लर्निंग के माध्यम से करीब 25 करोड़ स्कूली बच्चों को अलग-अलग माध्यमों से घर बैठे पढ़ाने की सरकार की कोशिश है। इसमें लाइव क्लासेस के साथ ही यू-ट्यूब, टीवी, रेडियो, सोशल मीडिया के अलग-अलग प्लेटफॉर्म है। इस योजना के तहत सरकार ने राज्यों की मांग के आधार पर स्थानीय भाषाओं में भी ऑनलाइन शिक्षा सामग्री तैयार की जाएगी। इस योजना को सिर्फ स्कूलों तक ही सीमित नहीं रखा जाएगा बल्कि इसे उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी ई-लर्निंग सामग्री तैयार की जाएगी।

डिजिटल क्रांति अर्थात डिजिटल इंडिया के माध्यम में भारत ने बहुत सारे ई-प्लेटफॉर्म का निर्माण कर दिया है जिससे भविष्य में अधिकांश समस्याओं का त्वरित समाधान किया जा सकता है। डिजिटल इंडिया ने ई-लर्निंग एप्प, ऑनलाइन पेमेंट, मोबाइल बैंकिंग, वेरियस ई-पोर्टल फॉर पेमेंट, यू-ट्यूब, ऑनलाइन शॉपिंग, ई-कॉमर्स के माध्यम से हमारी अधिकांश समस्याओं का समाधान हो जाता है। सिर्फ यही नहीं दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त होती है। विभिन्न कक्षाओं के लिए डीडी ज्ञानदर्शन, डीडी नेशनल,डीडी स्पोर्ट्स जैसे चैनलों से हमें विशेष जानकारी प्राप्त होती है। तकनीक के क्षेत्र में भारत ने अपनी एक अलग ही मुकाम हासिल किया है। इसके माध्यम से देश के दूर-दराज के गाँव और शहरों के जोड़कर सेतु का निर्माण किया है। आज इस कोरोना वायरस की महामारी में डिजिटल इंडिया की प्रासंगिकता बढ़ी है।

कोरोना कोहराम ने लोगों के बीच निराशा, भय, अनिश्चितता, बेचैनी और सामाजिक दूरी का वातावरण तैयार कर दिया है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे नए सामाजिक परिवर्तन कोरोना के बाद भी हम सभी पर मँडराता रहेगा। जिसे उत्तर कोरोना का काल कहा जाएगा। उच्च शिक्षा पूरी दुनिया औदर खासकर पश्चिमी देशों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण सहयोग कर रही है। अमेरिका में कोलम्बिया विश्वविद्यालय ने 1912 से 1917 तक न्यूयॉर्क राज्य की अर्थव्यवस्था में 5780 लाख डॉलर की वृद्धि किया और लगभग 20,000 (बीस हजार) लोगों के रोजगार का इंतजाम भी किया। इसी तरह प्रिंस्टन विश्वविद्यालय अमेरिका के न्यूजर्सी राज्य की अर्थव्यवस्था में प्रतिवर्ष 1.58 अरब डॉलर का योगदान करती है। उसने हजारों लोगों को नौकरी भी प्रदान कराया है। इसी प्रकार इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था में उसके विश्वविद्यालय लगभग 95 अरब डॉलर का योगदान देते हैं जो पूरे देश के जीडीपी के 1.2

प्रतिशत के बराबर है। यह आर्थिक आमदनी इन विश्वविद्यालयों को मूलतः फीस एवं दान से प्राप्त होती है। फीस की राशि का एक बहुत बड़ा भाग अंतरराष्ट्रीय छात्रों से प्राप्त होता है जिसमें भारत, चीन और दक्षिण एशिया के देशों के विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या होती है। ये छात्र वहाँ की शिक्षा की गुणवत्ता से लाभान्वित होते हैं। साथ ही साथ वहाँ के प्रवास के दौरान मिलने वाले अनुभव, विभिन्न गतिविधियों के अतिरिक्त उनके शिक्षा की विशेष गुणवत्ता की वजह से भी अधिकांश विद्यार्थी उसी विश्वविद्यालय में अध्ययन करना पसंद करते हैं। वर्तमान परिपेक्ष्य में यह जरूरी हो गया है कि विश्वविद्यालयों को ऑनलाइन शिक्षा से जोड़ा जाए ताकि कोरोना काल में उच्च शिक्षा नया आयाम पर पहुँच सके।

भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या के अनुपात में स्कूल और कॉलेजों की संख्या कम हैं। राष्ट्र के भविष्य के लिए जहाँ नर्सरी और प्राइमरी कक्षाओं में नामांकन के लिए पूरे देश में अफरा-तफरी मची रहती है वहीं ऑनलाइन के विकल्प से स्कूलों पर दबाव भी कम पड़ेगा और विद्यार्थियों एवं अभिभावकों पर अपने-अपने ढंग से पढ़ने-पढ़ाने की स्वतंत्रता भी प्राप्त होगी। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से स्कूलों में नामांकन की अनिवार्यता भी समाप्त हो जाएगी।

ऑनलाइन शिक्षा से हम विश्व की तमाम सामग्रियों से अवगत हो जाएंगे और हमारे ज्ञान भी विश्वस्तरीय हो जाएगा। ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, नालंदा सहित दुनिया के अच्छे विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञों के स्तरीय व्याख्यान, पाठ्य सामग्रियाँ, जर्नल, पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख इन्टरनेट पर उपलब्ध रहते हैं। यू-ट्यूब पर भी विडियो से हम विभिन्न विषयों के मँजे हुए शिक्षकों की कक्षाओं से लाभान्वित हो सकते हैं। अगर कोई सत्र पसंद न आए या रुचिकार न हो तो हम दूसरे शिक्षक के सत्र से ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। आज यू-ट्यूब पर हर विषय और अध्याय के बारे में विडियो द्वारा विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है। बहुत सारे देशों में ऑनलाइन शिक्षा को होम स्कूल या घर स्कूल के नाम से जाना जाता है। इसके पाठ्यक्रम भी काफी लचीले होते हैं। अभिभावक चाहें तो उसमें अपने ढंग से कोई भी बदलाव कर सकते हैं। इसका महत्वपूर्ण पक्ष यह होता है कि अच्छी ज्ञान सामाग्री और सुविधाएं उपलब्ध हैं। यदि सारी जानकारी घर बैठे ही उपलब्ध हो जाए तो अभिभावक अपने बच्चों को घर पर ही अच्छी शिक्षा दिला सकते हैं। ऐसी लचीली व्यवस्था से बच्चों में पढ़ने की स्वतंत्रता के साथ-साथ रचनात्मक मौलिकता भी बेहतर बनेगी और दुनिया के समक्ष ऐसी शिक्षा के बेहतर परिणाम भी सामने आएंगे।

पर्यावरण की दृष्टि से अगर देखा जाए तो बच्चों को प्रतिदिन स्कूल जाने के लिए बसों और गाड़ियों की यात्रा से छुटकारा मिलेगा। ट्रैफिक जाम में फँसने से मुक्ति मिलेगी। स्कूल आने-जाने में लगे समय का अध्ययन में सदुपयोग करेंगे। मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगे और सबसे बड़ी बात तो यह है कि स्थान विशेष में प्रदूषण बहुत कम हो जाएगा। इससे कॉपी, पुस्तक की जरूरतें कम पड़ेगी। सड़कों पर आने-जाने की भीड़ से बचेंगे। घर बैठे-बैठे दुनिया की तमाम जानकारी प्राप्त की जा सकती है। ऑनलाइन शिक्षा से समय की बचत के साथ-साथ आर्थिक रूप से मजबूती भी आएगी।

जैसे प्रथम विश्व युद्ध में लाखों लोग मारे गए थे। कल-कारखानों में काम करने के लिए सक्षम लोग नहीं थे। नतीजतन महिलाओं के काम पर जाने की शुरुआत हुई। प्रथम विश्व युद्ध ने अनेक तरह की वैज्ञानिक खोजों को प्रोत्साहित किया। ऐसे ही परिणाम दूसरे विश्व युद्ध के दौरान सामने आएँ थे। दुनिया भर में समानता, स्वतंत्रता और परस्पर शांति और सहयोग के विचार आएँ। कहा जाता है कि चीनी लिपि में खतरा और चुनौती एक ही तरह से लिखा जाता है। कोरोना तो साक्षात चीनी महामारी है और इसका मुक़ाबला इसे चुनौती मानकर ही किया जा सकता है।

किसी भी आपदा में अवसर जरूर मिलता है। लोगों में सिर्फ कुछ अलग करने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए। पुराने जमाने की तर्कहीन और अनुचित चीजों को त्याग कर अलग रास्ते पर चलना चाहिए। हाँ ! शुरुआती दौर में मुश्किलें जरूर आती हैं परंतु यह भी सत्य है कि ठान लेने से समस्याओं का निराकरण भी हो जाता है।

यूको बैंक के कोरोना कर्मवीरों को सलाम!

इस लॉकडाउन में सड़कों पर सन्नाटा पसरा हुआ है। गाड़ियों का आवागमन बंद है। चौक-चौराहों पर मातम-सा-पसरा हुआ है। कहीं-कहीं दूर पर पुलिस की गाडियाँ दिखाई देती हैं। सड़कों के किनारे-किनारे फल बेचनेवाले, सब्जी बेचनेवाले, ठेले पर खानेपीने की सामान बेचनेवाले, कपड़े बेचनेवाले, वेंडरों के ठेलें आदि दिखाई नहीं देती हैं। दिखाई देती हैं तो सिर्फ एंबुलेंस, डॉक्टरों की गाडियाँ, बैंक कर्मचारियों की गाडियाँ, सफाईकर्मियों की गाडियाँ। बाकी सब बंद। सभी नदारत। सभी अपने-अपने घरों में कैद। ऐसा लगता है मानों आज धरती और आसमां भी किसी सोच में पड़े हैं कि नया सबेरा कब आएगा। इस धरती पर खुशहाली की रौशनी कब लौट कर आएगी। शायद यह किसी को कोई खबर नहीं .....

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना सभी कोरोना योद्धाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है जिन्होंने इस विकट परिस्थिति में अपनी जिम्मेदारियों को पूरी कर्तव्यनिष्ठा के साथ निभा रहे हैं। ग्राहकों को लेनदेन या बैंकिंग सेवाओं में किसी भी प्रकार की समस्या न हो इसीलिए वे अपने कार्यों को सही तरीके से अंजाम दे रहे हैं। आज भी बहुत सारे स्टाफ सदस्य सरकारी यातायात की सुविधा नहीं होने के बावजूद भी वे किसी न किसी प्रकार से बैंक की शाखा में समय से अपनी उपस्थिति दर्ज करते हैं और ग्राहकों की सेवा में लग जाते हैं।

आज कोरोना कर्मवीरों की जितनी तारीफ की जाए शायद कम होगी। वर्तमान में, अधिकांश सरकारी कार्यालय बंद पड़े हैं। सिर्फ चिकित्सा, प्रशासन, बैंककर्मी, सफाईकर्मी और जीवन रक्षक सेवाकर्मी ही अपने परम कर्तव्य में जुड़े हुए हैं। इनकी बदौलत ही आज आर्थिक जगत की सेवाएँ सही दिशा में चल रही हैं। हम नतमस्तक हैं उनके प्रति जिन्होंने अपनी परवाह न करते हुए समाज व देश सेवा में समर्पित हैं।

हम विशेष रूप से साधुवाद देते हैं अपने बैंक के शाखा कर्मियों को जिन्होंने ग्राहकों को उचित सेवा प्रदान करने और सरकार के आदेशों का अनुपालन करने में कोई कमी नहीं की है। भारत सरकार द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देशों का पूरी तरह से कार्यान्वयन करने में

बैंककर्मियों ने अपनी भूमिका का पूर्णतः निर्वाह किया है।

नूतन चंद्रा
अंचल कार्यालय, पटना

शाखा परिसर के बाहर बहुत बड़ी भीड़ और लंबी लाईन भी लगी हुई है परंतु हमारे वित्तीय आर्मी ने सभी ग्राहकों को अपनी उत्तम सेवा से मंत्रमुग्ध कर दिया है। बहुत सारी शाखाओं में पुलिस बल नहीं मिलने के बावजूद भी शाखाओं ने प्रतिदिन चार से पाँच की भीड़ को राशि वितरण करने में कोई देरी नहीं किया और अपनी सेवा को सही दिशा में अंजाम दिया।

सरकारी द्वारा जारी डीबीटी (Direct Benefit Fund) के आदेश का पूर्ण रूप से पालन करते हुए हमारे बैंक के कर्मवीरों ने अपनी कार्यों में तनिक भी देरी किए बगैर अपने कार्यों को सही दिशा में अंजाम दिया। सभी लाभार्थियों को निर्धारित तिथि के तहत ही उनकी राशि का भुगतान कर दिया गया। ग्राहकों को तकलीफ न हो इस हेतु उन्होंने उनके लिए टेंट लगवाकर बैठने के लिए कुसियों और चाय पान का इंतजाम किया ताकि हमारे बैंक के ग्राहको भविष्य में भी सेवा करने का अवसर प्रदान करते रहें। इस लॉक डाउन के दौरान ग्राहकों की ओर से ऐसी कोई भी शिकायत नहीं आ रही है कि उनकी सेवा में कोई कमी रह गई हो। सभी ग्राहकों ने इस विकट परिस्थिति में भी उत्तम सेवा प्रदान करने के लिए हमारे बैंककर्मियों के प्रति तहे दिल से आभार व्यक्त किया है और उम्मीद जताई है कि भविष्य में भी वे अपने बैंक के साथ जुड़े रहेंगे।

वास्तव में, हमारे बैंक के सभी कर्मचारी कोरोना योद्धा हैं। वे कोरोना कर्मवीर हैं। वे अपनी कर्तव्यनिष्ठा, धर्मपरायणता और अपनी ज़िम्मेदारी के प्रति सदैव सजग हैं। उन्होने विकट परिस्थिति में भी अपनी सेवा और कर्तव्य का दामन नहीं छोड़ा और बखूबी उसका निर्वाह किया।

आज बैंकों में काम करनेवाले कर्मचारियों को बहुत सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है परंतु वे अपने गमों को भुलाकर दूसरों की सेवा में तत्पर हैं। कोरोना कर्मवीरों ने अपनी सेवा को ही सर्वोपरी माना है। उन्हें मालूम है कि ग्राहकों की बदौलत ही बैंक का व्यवसाय चलता है और सर्वोत्तम सेवा प्रदान करने से ही बैंक का विकास भी संभव है। बैंकर्स आज इस मुसीबत की घड़ी में उत्तम सेवा प्रदान कर ग्राहकों का आशीर्वाद भी प्राप्त कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत कोविड-19 हेतु राहत

भारतीय बैंक संघ

हमें आप व आपकी सुरक्षा का ध्यान है

आगामी तीन महिनों तक महिलाओं के जन धन खातों में रूपये 500/- प्रतिमाह के हिसाब से प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत पैसा जमा करवाया जा रहा है।

यह पैसा आपके खाते में है अत: आपका है, इसको निकालने के लिए जल्दी से बैंकों की तरफ मत जाएँ, जब जरूरत हो तभी निकालें।

फिर भी जो लोग तुरंत ही यह पैसा निकालना चाहते है उनके लिए अपने खाते के अंतिम अंको के आधार पर निम्नलिखित तिथियों पर यह सुविधा दी जा रही है।

यह इसलिए किया जा रहा है जिससे बैंक शाखाओं/बैंक मित्रों/ग्राहक सेवा केन्द्रों पर अनावश्यक भीड़ ना हो व सोशल डिस्टेंसिंग का भी पालन हो।

A स्वाते के अंतिम अंक 0 और 1 के लिए 3 अप्रैल 2020

B स्वाते के अंतिम अंक 2 और 3 के लिए 4 अप्रैल 2020

C स्वाते के अंतिम अंक 4 और 5 के लिए 7 अप्रैल 2020

D स्वाते के अंतिम अंक 6 और 7 के लिए 8 अप्रैल 2020

E स्वाते के अंतिम अंक 8 और 9 के लिए 9 अप्रैल 2020

कृपया यह संदेश औरो को भी बताएं

9 अप्रैल 2020 के बाद उपरोक्त स्वाताधारक अपनी सुविधानुसार इस राशि को अपने खाते से कभी भी निकाल सकते हैं।

सभी स्वाताधारकों से अपील की जाती है कि बैंक शाखाओं में अनावश्यक भीड़ से बचने के लिए अपने नजदीकी किसी भी एटीएम पर अथवा बैंक मित्र / ग्राहक सेवा केन्द्र से रूपे कार्ड का प्रयोग करते हुए अथवा POS मशीन से अधिकतम रूपये 2000/- तक निकाल सकते है।

कृपया नोट करें कि भारत सरकार के निर्देशानुसार जून 2020 तक अपने खाते से किसी भी एटीएम द्वारा रूपये निकालने पर कोई चार्ज नहीं लिया जायेगा।

अपनी सुरक्षा व दूसरों की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए कृपया सहयोग करें।

सुरक्षित रहें, स्वस्थ रहें।

इंडियन बैंक्स एसोसिएशन द्वारा जनहित मे जारी।

कोविड -19 बैंकिंग लेन-देन में बरतें सावधानी

कोविड-19 (Covid-19) के संक्रमण पर अंकुश लगाने हेतु बैंक में किए जा रहे लेन-देन के क्रम में बारीकी से सावधानी बरती जाए ताकि कोरोना वायरस को हराया जा सके। जैसाकि हम सभी को ज्ञात है, कोरोना की महामारी के बीच, ग्राहकों के लिए बैंकिंग सेवाओं को सतत रूप से जारी रखने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। बैंको द्वारा इस दिशा में सेवाओं को जारी रखने में अहम भूमिका निभाई जा रही है। इस संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि समय-समय पर कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए आवश्यक परहेज एवं नियंत्रण को बार-बार जानकारी में लाया जाए।

स्टाफ सदस्यों को भी जागरूक तरीके से हर प्रकार की सतर्कता बरतने के साथ एवं सुरक्षा के सभी उपायों को ध्यान में रखते हुये जिम्मेदारियों का पालन करना होगा। इस विषय पर केंद्र सरकार, राज्य सरकार, जिला प्रशासन, से प्राप्त सभी सूचनाओं पर आवश्यक कार्रवाई करें।

कोरोना के संक्रमण से बचाव हेतु निम्नांकित बातों का विशेष रूप से ध्यान रखने हेतु बार-बार दुहराना अतिश्योक्ति नहीं होगी:-

1. हर समय सामाजिक दूरी बनाए रखी जाए। बैंक के बाहर बैनर/तख्ती के माध्यम से सामाजिक दूरी बनाए रखने हेतु ग्राहकों को आगाह किया जाए। बैंकों के अंदर लेन-देन काउंटरों पर भी सामाजिक दूरी का पालन सुनिश्चित करें।
2. बैंक में जहां भी संक्रमण की संभावना ज्यादा हो, यथा नकदी के लेन-देन/रखने की जगह, इत्यादि, वहाँ उचित बारंबारता से सेनीटाइजेशन किया जाय।
3. बैंको के सुरक्षा प्रहरी, बैंक के बाहर ही ग्राहकों को कम से कम एक मीटर की दूरी रखते हुये पंक्तिबद्ध होने को कहें। बैंक के बाहर पंक्तिबद्ध होने के लिए आवश्यकतानुसार टेंट की व्यवस्था भी की जा सकती है।
4. बैंकों के स्टाफ, ग्राहक, सभी मास्क का प्रयोग करें।
5. बैंकों के बाहर सेनीटाईजर या साबुन-पानी से हाथ धोने की व्यवस्था हो।
6. खास तौर से सीएसपी केन्द्रों को उपरोक्त सभी बिंदुओं का पालन करना है। वे आवश्यक होने पर स्थानीय प्रशासन की मदद से सामाजिक दूरी सुनिश्चित कर सकते हैं। बैंकों को यह निदेश भी दिया जाता है कि सीएसपी केन्द्रों के कार्यकलापों पर सतत रूप में निकट से नजर बनाई रखी जाए ताकि ग्राहकों/हितधारकों को किसी प्रकार की शिकायत नहीं हो।
7. संपर्क और स्पर्श से बचाव हेतु संक्रमण की सभी प्रकार की संभावनाओं पर विचार करते हुए बैंक, सभी विवेकसम्मत कार्रवाई करते रहें।
8. अपने कार्यालय में भी नियमित रूप से उपयोग की जानेवाली चीजों को सैनीटाईज़ कराते रहें। ताकि संक्रमण नहीं फैले। आधे घंटे या एक घंटे के अंतराल पर अपने हाथों को सैनीटाईज़ करते रहें ताकि आप स्वस्थ्य रहें।
9. कोरोना वायरस (कोविड-19) के लिए बचाव ही उचित उपचार है। कार्य करें लेकिन सावधानी जरूर बरतें।
10. शाखा में कार्य करनेवाले स्टाफ सदस्य यह हमेशा ध्यान दें कि आपकी शाखा परिसर में ग्राहकों द्वारा सामाजिक दूरी का निश्चित रूप से पालन किया जा रहा है।
11. बैंकिंग लेन-देन के बाद ग्राहकों से निवेदन करें कि वे शाखा परिसर से तुरंत निकाल जाएँ ताकि अन्य ग्राहकों को ससमय उचित सेवा प्रदान की जा सके।

सावधानी बरतें,
संक्रमण मुक्त रहें,
सुरक्षित रहें!

लॉकडाउन के दौरान बैंकिंग सेवाएँ

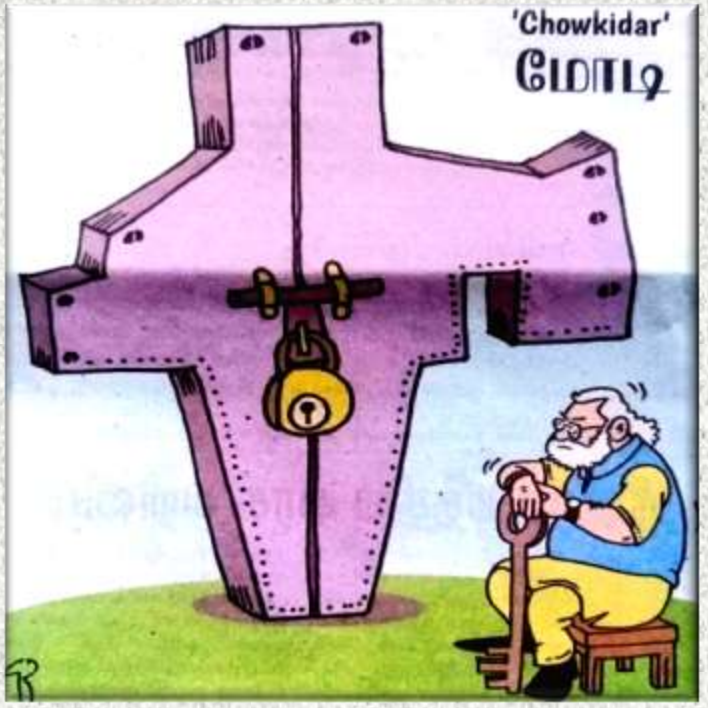

लॉकडाउन का मतलब एक तरह से आपातकाल ही होता है। परंतु इसमें अत्यावश्यक सेवाओं जैसे- चिकित्सा, प्रशासन, बैंकिंग, खाद्य सामग्री, सफाई आदि प्रदान की जाती है। इस दौरान लोगों को घरों से बाहर निकलने पर मनाही होती है। सिर्फ जरूरी व जीवन रक्षक चीजों की ख़रीदारी जैसे- दवा, चिकित्सा और खाद्य पदार्थ खरीदने के लिए ही निर्धारित अवधि के तहत घर से निकल सकते हैं।

एक सर्वे के अनुसार यह भी पाया गया कि बैंकिंग सेवा पहले स्थान पर है। देश के 10 में से 9 बड़े शहरों में किए गए इस सर्वे में कुल 89 फीसदी लोगों ने बैंकिंग सेवा को पहला स्थान दिया है। लॉकडाउन के दौरान भी ग्राहकों को एटीएम, ई-बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, शाखाओं में लेनदेन संबंधी अधिकांश सेवाएँ निर्बाध रूप से प्रदान की जा रही हैं।

आज पूरी दुनिया कोरोना वायरस (कोविड-19) से ग्रसित है। पूरे विश्व में लाखों लोग संक्रमित हो चुके हैं और दो लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। आज बड़ा से बड़ा विकसित राष्ट्र भी इस बीमारी के आगे घुटने टेक चुका है। जब तक इसकी वैक्सीन की खोज नहीं हो जाती तब तक इससे बचने का सिर्फ और सिर्फ एक ही उपाय है क्वारंटाइन यानि एकांतवास । यह तभे संभव है जब देश में सिर्फ और सिर्फ लॉकडाउन हो। सिर्फ लॉकडाउन !

भारत में आज कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण को रोकने में लॉकडाउन कारगर सिद्ध हो रहा है। हम सभी इस लॉकडाउन का बखूबी पालन कर रहे हैं। इस लॉकडाउन के समय बैंकिंग जगत के स्टाफ सदस्यों की जितनी भी तारीफ की जाए कम होगी। आज बैंकर्स उसी तरह कार्य कर रहे हैं जैसे- आर्मी, सेना, पुलिस, डॉक्टर, सफाईकर्मी कर रहे हैं।

आज यूको बैंक की विभिन्न शाखाओं में कार्यरत कोरोना योद्धाओं की सराहना के लिए शायद शब्द कम पड जाएँ। क्योंकि इस विषम परिस्थिति में भी वे कर्मवीर अपने कार्यों को सही दिशा में अंजाम दे रहे हैं। ग्राहकों की सेवा कर वे पुण्य कमा रहे हैं। आज प्रतिदिन करीब 400 से 500 ग्राहकों को राशि का भुगतान कर उन्हें जीवन यापन के लिए आशान्वित कर रहे हैं। यूको बैंक की शाखा परिसर में आनेवाले ग्राहकों केल ईईए सैनीटाईजर, मास्क, साबुन आदि की व्यवस्था की गई है। ग्राहकों को ज्यादा देर तक खड़ा न रहना पड़े इस हेतु हमारी शाखाओं ने टोकन सिस्टम के अतिरिक्त शाखा परिसर के बाहर टेंट लगाकर उनके लिए कुर्सी, पीने का पानी, चाय आदि की व्यवस्था की है। शाखा परिसर में आने और जाने के बाद उनके हाथों को निश्चित रूप से सैनीटाईज़ कराया जाता है। इस मुसीबत की घड़ी में सभी बैंकर्स ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवा प्रदान कर रहे हैं। कर्म ही पूजा है के आधार पर आज बैंकर्स अपने कार्यों को चुनौतीपूर्ण तारीक से निपटान कर रहे हैं। वे अपने परिवार की परवाह न करते हुए ग्राहक सेवा, जन-सेवा और राष्ट्र सेवा को सर्वोपरी मानते हैं। बैंकर्स के लिए पूरा राष्ट्र ही अपना परिवार है।

ग्राहकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बैंक ने कोविड-19 के तहत पीएमजेडीवाई में ओडी खाते खोले जा रहे हैं।

यूको सहयोग पीएमजेडीवाई ने ग्राहकों को बेहतर सेवा देने के उद्देश्य से बैंकों ने इस योजना में तीव्रता दिखाया है। वे सभी ग्राहक जिन्हें पैसे की नितांत आवश्यकता है उनके लिए त्वरित रूप से ऋण सुविधा प्रदान किया जा रहा है। साथ ही साथ अधिकांश बैंकों ने विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत अपने ब्याज दर में कमी की है ताकि ग्राहकों को इस विकट स्थिति में आर्थिक रूप से मदद मिल सके। सरकार द्वारा यह भी घोषणा की गई है कि सभी ऋणधारकों से तीन महीने के बाद किश्त लिया जाए। सभी बैंकों ने इस आदेश का सर्वोच्चयता से अनुपालन किया है।

हमारे बैंक ने वरिष्ठ नागरिकों और अस्वस्थ्य ग्राहकों के लिए डोर-टू-डोर बैंकिंग सुविधा की व्यवस्था की है। इस विषम परिस्थिति में बैंकों ने अपने ग्राहकों को सर्वोच्चय प्राथमिकता देते हुए अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है। खासकर बैंकों ने अपने ग्राहकों से यह भी आग्रह किया है कि "कोरोना डरो ना, डिजिटल बैंकिंग करो ना" । इस माध्यम से बैंकों में भीड़ कम लगेगी और ग्राहकों को घर बैठे सभी बैंकिंग सुविधाओं का लाभ मिल जाता है। शहरी क्षेत्र के अधिकांश ग्राहक ई-बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, ऑनलाइन शॉपिंग आदि का लाभ उठा रहे हैं।

आज के परिप्रेक्ष्य में शहरी क्षेत्र के ग्राहकों ने खाद्य सामग्री, किताबें, घर के जरूरी समान, दवाएं, चिकित्सा संबंधी चीजों को ऑनलाइन शॉपिंग के माध्यम से घर पर मँगवा रहे हैं और इन सभी के बीच भुगतान करने का माध्यम सिर्फ बैंकिंग है जिसने एक दूसरे के बीच सेतु का कार्य किया है। वर्तमान में यह भी पाया गया है कि इस लॉकडाउन में ऑनलाइन शॉपिंग और भुगतान ने लोगों के जीवन को आसान बनाया है। और इसमें बैंकों के भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। इस विकट स्थिति में बैंकिंग सुविधाएं सुचारु रूप से संचालित की जा रही हैं। लॉकडाउन के दरम्यान सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं को लागू किया जा रहा है और राशि के भुगतान की सारी जिम्मेवारी बैंकों के ऊपर दी गई है। निर्धारित तिथि के तहत भी लाभार्थियों को संबंधित राशि का भुगतान किया जा रहा है।

बैंक में ग्राहक सेवा केन्द्रों पर दूर-दराज इलाकों के लोगों को भी बैंकिंग सुविधाएं मुहैया कराई जा रही है। इस लॉकडाउन के तहत बैंकों द्वारा पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था के साथ-साथ शाखाओं और ग्राहक सेवा केन्द्रों पर भी सामाजिक दूरी का पालन किया जा रहा है ताकि संक्रामण का खतरा नहीं बढ़ें। इसके लिए सभी शाखाओं और केन्द्रों पर ग्राहकों के लिए गोलाकार चिह्न बनाया हुआ है और ग्राहकों को बारी-बारी से उसी चिह्न के दायरे में आ कर बैंकिंग संबंधी लेनदेन कर सकते हैं। इस हेतु जिला और पंचायत के विकास अधिकारी और निरीक्षक दल भी निरंतर निरीक्षण करते रहते हैं कि सामाजिक दूरी का अनुपालन किया जा रहा है या नहीं।

कोरोना की महामारी के बीच, ग्राहकों के लिए बैंकिंग सेवाओं को सतत रूप से जारी रखने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहें हैं। बैंक की शाखाओं द्वारा इस दिशा में सेवाओं को जारी रखने में अहम भूमिका निभा रही है। इस संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि समय – समय पर कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए आवश्यक परहेज एवं नियंत्रण को बार–बार जानकारी में लाया जा रहा है। स्टाफ सदस्यों को भी जागरूक तरीके से हर प्रकार कि सतर्कता बरतने के साथ एवं सुरक्षा के सभी उपायों को ध्यान में रखते हुए जिम्मेदारियों का पालन करते हुए आवश्यक कारवाई की जा रही है।

1. बैंक की शाखा एवं सीएसपी केंद के बाहर बैनर तथा तख्ती के माध्यम से सामाजिक दूरी बनाए रखने हेतु ग्राहकों को आगाह किया जा रहा है। शाखा के अंदर लेन-देन काउटरों पर भी सामाजिक दूरी का पालन सुनिश्चित किया जा रहा है।
2. बैंक की शाखा में जहां भी संक्रमण की संभावना ज्यादा हो, यथा नकदी के लेन-देन / रखने की जगह, इत्यादि, वहाँ उचित बारंबारता से सेनीटाइज किया जाता है।

3. बैंक कि सुरक्षा प्रहरी, बैंक के बाहर ही ग्राहकों को कम से कम एक मीटर कि दूरी रखते हुए पंक्तिबद्ध होने का निवेदन करते हैं और बैंक के बाहर पंक्तिबद्ध होने के लिए उनके लिए आवश्यकतानुसार टेंट की व्यवस्था भी की गई है।
4. बैंक की सभी स्टाफ सदस्य , ग्राहक, मास्क लगाकर या रूमाल या गमछे से मुँह ढँककर आने के लिए निर्देश दिया जाता है ताकि कोरोना वायरस के संक्रामण को रोका जा सके।
5. बैंक के बाहर सेनीटाइजर या साबुन –पानी से हाथ धोने की व्यवस्था भी की गई है।
6. खास तौर से सीएसपी (CSP) केन्द्रों को उपरोक्त सभी बिन्दुओं का पालन करना सुनिश्चित किया गया है। वे आवश्यकता होने पर स्थानीय प्रशासन की मदद से सामाजिक दूरी का अनुपालन सुनिश्चित करते हैं । बैंक की शाखा को यह भी निर्देश दिया गया है कि सीएसपी केन्द्रों के कार्यकलापों पर सतत रूप में निकट से नजर रखी जाए ताकि ग्राहकों / हितधारकों को किसी प्रकार की शिकायत नहीं हो।
7. कोरोना वायरस को रोकने हेतु संपर्क व स्पर्श से बचाव के लिए संक्रमण की सभी प्रकार की संभावनाओं पर विचार करते हुए सभी स्टाफ सदस्य विवेकसम्मत कार्रवाई करते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बैंकिंग जगत ने अपनी सेवा को परम धर्म मानने हुए ग्राहकों को बेहतर से बेहतर सेवा प्रदान करने की वचनबद्धता का निर्वाह किया है। अपनी ग्राहक सेवा को प्राथमिकता देते हुए उन्हें किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होने दी। सभी बैंकर्स ने अपने सौंपें गए दायित्वों का सम्पूर्ण रूप से निभाया है ताकि ग्राहकों के चेहरे पर बैंकिंग सेवा का मुस्कान सदैव कायम रहे।

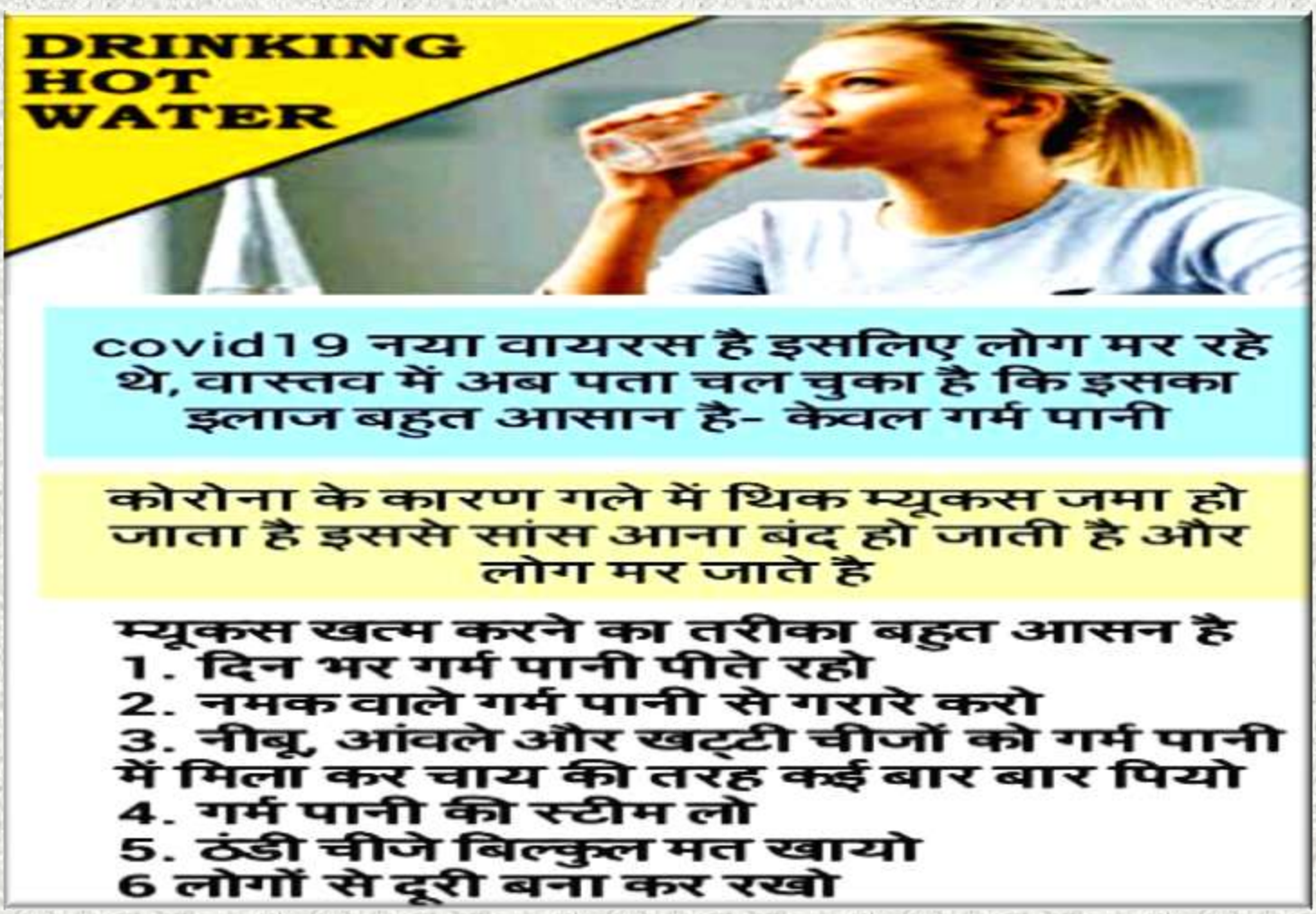

आइए, हम सब मिलकर कोरोना से लड़ने हेतु माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा किए गए सातों निवेदनों का अनुसरण करें।

1. अपने घर के बुजुर्गों का विशेष ध्यान रखें। ऐसे व्यक्ति जिन्हें पुरानी बीमारी हो उनका हमें विशेष ध्यान रखना है।
2. लॉकडाउन और सामाजिक दूरी की लक्ष्मण रेखा का पूरी तरह पालन करें। घर में बने मास्क का प्रयोग करें।
3. अपनी आंतरिक क्षमता को बढ़ाने के लिए आयुष मंत्रालय द्वारा दिये गए निर्देशों का पालन करें।
4. कोरोनावायरस संक्रमण का फैलाव रोकने के लिए आरोग्य सेतु एप्प अवश्य डाउनलोड करें और दूसरों को भी इस एप्प को डाउनलोड करने के लिए प्रेरित करें।
5. जितना हो सके उतना किसी गरीब परिवार की देखरेख करें, उनके भोजन की आवश्यकता पूरी करें।
6. आप अपने व्यवसाय और उद्योग में अपने साथ काम कर रहे लोगों के प्रति संवेदना रखें, किसी को नौकरी से न निकालें।
7. देश के कोरोना योद्धाओं जैसे हमारे डॉक्टर, नर्स, सफाईकर्मी, पुलिसकर्मी आदि सभी लोगों का हम सम्मान करें।

www.ucobank.com /official.ucobank @UCOBankOfficial @official.ucobank

यूको बैंक UCO BANK

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

ये ज़िंदगी की पहली रेस होगी..., जिसमें रुकने वाला जीतेगा.....!!!

कोरोना योद्धाओं को शत-शत नमन !

कहा जाता है कि मुसीबत के समय में काम आनेवाला व्यक्ति, धन, विद्या और समाज हमेशा याद रखा जाता है। अगर आप विपत्ति से समय किसी की मदद करते हैं तो वह आपका सदैव ऋणी हो जाता है, मानों जैसे आपने उसके ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया हो। इस समय मुझे बाईबिल की बात याद आ रही है, जिसमें कहा गया है "खुशी/उत्सव के घर (माहौल) में जाने से बेहतर है कि किसी के मातम, गम या दुःख में शामिल हों।" विपत्ति या दुःख के समय जो अपने कर्तव्यों का निर्वाह करता है या किसी की मदद करता है वह व्यक्ति हमेशा याद रखा जाता है। वही सच्चा साथी व व्यक्ति माना जाता है।

हमारे बैंक की शाखाओं में कार्य करनेवाले कोरोना कर्मवीरों के प्रति जितनी भी कृतज्ञता व्यक्त करें, शायद कम होगा। आज आपकी तारीफ के लिए शायद शब्दकोश के भी शब्द कम पड़ जाएंगे। ग्राहकों के प्रति आपकी उत्तम और सच्ची सेवा भावना से जुड़ी हुई है और भावना के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। किसी की भावना का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता।

आज हम नतमस्तक हैं अपने बैंक के उन सभी कोरोना योद्धाओं के प्रति जो अपने कर्तव्यपथ पर अडिग रहते हुए ग्राहकों को बैंकिंग सेवाएँ देने के लिए तत्पर हैं। हम आप सभी के कार्यों को शत-शत नमन करते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आप अपने दायित्वों का निर्वाह उसी प्रकार कर रहे हैं जैसे कोई आर्मीमैन अपने देश की सीमा पर चौकन्ना रहकर देश की आन-बान और शान को सदैव बनाए रखता है। इस विकट परिस्थिति में भी आप अपने ग्राहकों को सुगमता से सेवा प्रदान कर रहे हैं यह बहुत ही सराहनीय कार्य है। आपके (इस समय के) कार्यों को ग्राहकों द्वारा हमेशा ही याद किया जाएगा और ग्राहक आपके कार्यों के प्रति भविष्य में ऋणी भी रहेंगे क्योंकि विकट समय में भी आप उनके साथ खड़े हैं।

हमारे कोरोना कर्मवीर अभिनंदन के पात्र हैं। आपकी सेवा अतुलनीय है। आपकी लगनशीलता, कर्तव्यव्यनिष्ठा और समयनिष्ठा की बदौलत ही बैंक सुचारू तरीके से संचालित हो रहा है। शाखा के सभी स्टाफ सदस्य ही बैंक के फ्रंटलाईन हैं। आप लोग ही सही मायने में बैंक के प्रतिनिधि हैं। आज बैंक की साख व छवि आपकी सेवा पर ही निर्भर है। आपकी सेवा से ही बैंक का विकास संभव है। आप अपने कर्तव्यपथ पर डटे रहें। हम आप सभी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, पटना

सक्षम हैं हम-जीतेंगे हम

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का — Honours Your Trust